न॥४३॥वारिजवत जलजवत पद्म मनुपम पंकज
वत॥महाराम महधाम महाजसवंत महासत॥नि
जरूपालक रूनालबोधनायक विद्यानिधि॥पर
मरूपप्रसमीसपरमजोगीसपरमविधि॥४४॥वस्तु
छंद॥सुरसभोगीसीलसमुदाय॥सुभकारन।
शीलदृढ॥शीलरासिकंटकनिवारन॥त्रिगुना
तमतपतिहरपरमहंसपरपंचवारन॥परमपदारथ
परमपथदुषभंजनदुरलक्षतोषीसुषपोषीसुगत
दमीदिगंबरदक्ष॥४५॥इतिश्रीमहामंत्रनामपंच
मसतकंसंपूरनं॥५॥रोडकछंद॥जयतिदेव॥प
रमप्रबोधपरोक्षरूपपरमादनिकंदन॥परमध्या
नधरपरमसाधुजगपतिजगवंदन॥जिनजिनपति
जिनसिंहजगतमनिबुधकुलनायक॥कल्याती
तकुलालरूपडिगमयडिगदायक॥४६॥कोपनि
वारनधर्मरूपगुनरासिरिपुंजय॥करुनामदन
समाधिरूपशिवकरसत्रुंजय॥परावर्त्तरूपीप्रस
न्नज्ञातमदमोहमय॥निजाधीननिरदुंदब्रह्मवेदक
वितीतभय॥४७॥अपुनर्भवजिनदेवसर्वतोभद्र
कलिलहर॥धर्माकरध्यानस्थधारनाधिपतिधीर
धर॥त्रेपुरगार्भत्रिगुनीत्रिकालकुशलीतपादर॥
हृषमंदिरसुषमयअनंतलोचनअविषादप॥४८

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३॥ रुनारिपर[illegible]गति[illegible]नसमुद्र॥ सरवगपस्तुदरशनम्
रातन॥ सकरस्तुवासवासीअलिप्न॥ ३०॥ शिव संपुट
वासीसुषनिधान॥ शिवपंथसुभंकरशिषावान॥ अस
मानअसधारीअमेष॥ निरदुंदीनिरजडनिरविशेष
॥[illegible]॥ दोहरा॥ विस्मयधारीबोधमयविस्वनाथविस्वेश
॥ बंधविमोचनवत्र [illegible] ॥ ३१॥ इतिश्री[illegible]
नामचउर्थकशतकंसंपूर्न॥ ४॥ रोडकछंद॥ जयतिहव
०॥ महामंत्रमंगलनिधानमलहरनमहाजप॥ मोष
सरूपीमुकतिनाथमतिमथनमहातप॥ निस्तरंगनि
:संगनिपमनायकनंदीसुर॥ महारानिमहाजानिम
हाविस्तारमहागुरु॥ ४०॥ परिपूरनपरजाइ रूपक
मलस्थकमलवंत॥ गुननिकेतकरुनासमूह भरनीह
ध्यानरत॥ भूतिवानभूतेशभारछमभरमउछेदक॥
सिंहासननायकनिरासनिरभौपदवेदक॥ ४१॥ शिव
कारनशिवकरनभविकबंधवभवनासन नीरिंस
निःसमरसिद्धसासनशिवआसन महाराजमहका
जमारजितमारविहंडन गुनमयपदरवसरूपदसा
धरदारिदषंडन॥ ४२॥ जोगीजोगअतीतजगतउद्ध
रनउजागर जगतबंधुजिनराजसीलसंचयसु
षसागर महासूरसुषमदनतरनतारनतमनास
न॥ [illegible]नितनामअनंतधामनिरमलनिरवास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

५
॥५५॥ वीतरागबुद्धीसविषारी॥ चंद्रोपमचिनंद्रविवहा
रा॥ अगतिरूपगतिरूपविधाता॥ शिवविलाससु
चिमयसुषदाता॥५६॥ परमपवित्रअसंखप्रदेशी
करुनासिंधुअचिंतअभेसी॥ जगतसूरनिरमलउ
पयोगी॥ भद्ररूपभगवंतअभोगी॥५७॥ भानोपमभर
ताभवनासी॥ दुंदविदारनबोधविलासी॥ कौतुकनिधि
कुशलीकल्याना॥ गुरुगुसाईगुनमयग्यानी॥५८॥
निरातंकनिरवैरनिरासी॥ भेषातीतमोषपदवासी॥ म
हाविचित्रमहारसभोगी॥ भ्रमभंजनभगवानअरोगी॥
॥५९॥ कलमषभंजनकेवलदाता॥ धाराधरनधरापति
धाता॥ ग्यानाधिपतिपरमचारित्री॥ परमातमविदपरम
विचित्री॥६०॥ संगातीतसंगपरिहारी॥ एकअनेकअनं
ताचारी॥ उद्यमरूपाऊरधगामी॥ विस्वरूपविजयीवि
श्रामी॥६१॥ दोहरा॥ धर्मविनायकधरमभुजधरमरूप
धरमग्य॥ रतनगर्भराधारमन॥ रसनातीतरसग्य॥६२॥
इतिश्रीकेवलग्यानीनामसप्तमशतकंसंपूरनं॥ चौपई
॥अगावती॥ परमप्रदीपपरमपददानी॥ परमप्रतीतिप
रमदिग्यानी॥ परमजोतिअघहरनअगोही॥ अजितअषंड
अनंगअदेही॥६३॥ अतुलअशेषअरेषअलेषी॥ अभज
अवाचअद्वेषअभेषी॥ अकुलअमूढअकायअकर्मी॥ गु
नधरगुनदायकगुनमर्मी॥६४॥ निःसहायनिर्ममनीर

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकत्रयवासीत्रिकालसाषीकरुनाकर॥गुनआ
श्रयगुनेधामगिरापतिजगतप्रभाकर॥धीरजधोरी
धोतकर्मधर्मगधामेसुर॥रत्नाकरगुनरत्नराशिरज
हररामेस्वर॥४९॥निरलिंगीशिवलिंगधारबहुतंउत्र
नानन॥गुनकदंबगुनरसिकरूपगुनअंघ्रिपकान
न॥निरअंतमनिरधाररूपनिजपरपरकाशक॥वि
गताश्रवनिरबंधबंधहरवंधेविनासक॥५०॥दृह
तअनंकनिरंसअंसगुनसिंधुगुनालय॥लछिमी
पतिलीलानिधानवितपतिविगतालय॥चंद्रवदनगु
नमदनचित्रधर्मासुषथानक॥ब्रह्मचारीवग्रबी
जबहुविधिनिरवानक॥५१॥**दोहरा**॥सुषकदंब
साधकसरन॥सुजनइष्टसुषवास॥बोधरूपबहु
लातमक॥सीतलसीलविलास॥५२॥**इतिश्रीपर**
मप्रबोधनामअष्टमशतकसंपूरणं॥चौपहीछंद॥
मृगावतीमधुमालतीकीढाल॥ केवलग्यानीकेवलद
रसीसंयमीसमरसी॥लोकातीतअलोकाचारीत्रिक
ालग्यधनपतिधनधारी॥५३॥चिंताहरनसायनरू
पी॥विध्यादलनमहारसरूपी॥निर्द्वंतकरताम्रषाप
हारी॥ध्यानधुरंधरधीरजधारी॥५४॥ध्याननाथध्य
यकबलवेदी॥घटातीतघटहरघटभेदी॥उदयरूप
उद्दातउछाही॥कलुषहरनहरकिलविषदाही॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ [illegible]तशोकए॥ अगनितबलअमलालोकए॥ घ्रतसुध
र्म क्रतहोमए॥ सतस्तूरअपूरवसोमए॥७५॥ हिमवतह
तसंतापए॥ ब्रह्मव्यापीविगतालापए॥ सुन्यमरूपी ग्रत
ए॥ सुपसिंधुस्वयंसंभूतए॥७६॥ समयसारस्तुतिधारए॥
अविकलपअजलपाचारए॥ संतिकरनघ्रतसंतिए॥
कलरूपमनोहरकंतिए॥७७॥ सिंहासनआरूढए॥ अ
समंजसहरनअमूढए॥ लोकजईहतलोभए॥ क्रतक
र्मविजयघ्रतसोभए॥७८॥ म्रत्युंजयअनुजोगए॥ अनु
कंपअसंखअसोगए॥ सुविधिरूपसुमतीसए॥ श्रीमा
नमनीषाधीसए॥७९॥ विदितविगतअवगाहए॥ ज्ञान
कारजरूपअथाहए॥ वर्द्धमानगुनभानए॥ करुनाक्षर
लीलनिधानए॥८०॥ अषपनिधानअगाधए॥ ह्तक
लिलनिहतअपराधए॥ साधिरूपसाधकधनीए॥ महि
मागुनमेरुमहामनीए॥८१॥ उतपतिवैक्रववानए॥ त्रि
पदीत्रिपुजत्रिविधानए॥ जगजितजगदाधारए॥ करु
नारह्विपतिविदारए॥८२॥ जगसाषीवरवीरए॥ गुन
गेहमहागंभीरए॥ अभिनंदनअभिरामए॥ परमेनपरम
उदामए॥८३॥ दोहरा॥ सगुनविभूतीवैभवी॥ सेमुषीस
संबुद्ध॥ सकलविश्वकर्माअभव॥ विश्वविलोचनसु
द्ध॥८४॥ इतिश्रीदुरितदलनंनामनवमंशतकंसंपूरनं॥
सालनंगलकमलाकंरस्री॥ शिवनायकशिवएवए॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गी ।। सुधारूपसुपथगसोभागी ।। हतकेवलीमुक्तसंतागी
।। सहजसरूपीसर्वविआपी ।। ६५ ।। महाकौतुकीमहदी
नानी ।। कपटविदारनकरुनादानी ।। परदारनपरमारथ
कारी ।। परमपौरुषीपापप्रहारी ।। ६६ ।। केवलब्रह्मध
रमधनधारी ।। हतविभावहतदोषहतारी ।। भविकदिवाक
रमुनिमृगराजा ।। दयासिंधुभवसिंधुजहाजा ।। ६७ ।। शंभु
सरवदरसी शिव पंथी ।। निराबाधनिःसंगनिरगंथी ।। ज
तीजंत्रदाहतहितकारी ।। महामोहवारनबलधारी ।। ६८ ।।
चित्रीचित्रगुपतचिद्वेदी ।। आकारीसंसारछेदी ।। चि
संतानीचेतनवंशी ।। परमाचारीभरमविधंसी ।। ६९ ।। महा
चारस्वसरनसिवगामी ।। बहुदेसाअनंतपरिनामी ।। वित
थभूमिदारनहलपानी ।। भ्रमवारिजवनदहनहिंमानी
।। ७० ।। चारुचिदंकितदुंदातीती ।। दुर्गरूपदुर्लभदुरजीती
।। सुभकारनसुभकरमंत्री ।। जगतारनजोतीसुरजंत्री ।। ७१ ।।
।। दोहरा ।। जिनपुंगवजिनकेहरी ।। जोतिरूपजगदीस ।। मु
कुतमुकुंदमहेसहरन ।। महदानंदमुनीस ।। ७२ ।। इति श्री पर
मज्ञरीपनाम अष्टमशतकं संपूरनं ।। मंगलकमलाकं ।। ७ ।।
दुरितदलनसुषकंदए ।। हतभीतअतीतअमंदए ।। शीलस
रनहतकोपए ।। अनभंगअसंगअलोपए ।। ७३ ।। हंसगरभ
हतमोहतमोहए ।। गुनसंचयगुनसंदोहए ।। सुषसमाज
मनेहए ।। ७४ ।। छोभदल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ जए दुषगजभंजनम्रगराजए ॥९६॥ भवकंतारउधारए
॥ संसयमृनालअसिधारए ॥ लोभशिषरिनिरघातए ॥
विपदानिशिहरनप्रभातए ॥९७॥ दोहरा ॥ संवररूप
सिवरमन ॥ श्रीपतिशीलनिकाइ ॥ महादेवमंथमथन
॥ सुषमयसुषसमुदाइ ॥९८॥ इतिश्रीसिवनायकना
परशमशतकंसंपूर्णं ॥ दोहा ॥ इतिश्रीसहस्रअठोतरी
नाममालिकामूल ॥ अधिककसरिपुनरुक्तिकी ॥ कवि
प्रमादकीभूल ॥९९॥ परमपिंडब्रह्मंडमें ॥ लोकशिषि
रनिवसंत ॥ निरषिनृत्पनानारसी ॥ वानारसीनमंत ॥
१००॥ महिमाब्रह्मविलासकी ॥ मोपहिंकहीनजाइ ॥ ज
थासकतिकछुवरनई ॥ नामकथनगुनगाइ ॥१०१॥ सं
वतसोलहसैनवे ॥ श्रावनसुदिआदित्य ॥ करनछत्र
शितपंचमी ॥ प्रगटीनामकवित्त ॥१०२॥ इतिश्रीभाष
सहस्रनामसमाप्तं ॥१॥ श्री ॥ ॥ श्रीवीतरागायनमः
सिंदूरप्रकरनके कवितलिष्यते ॥ छप्पय ॥ सोभितत
पगजराज ॥ सीससिंदूरपूरछबि ॥ बोधदिवसआरंभ ॥
करनकारनउदोतरवि ॥ मंगलतरुपल्लवकषाय ॥
कंतारहुंतासन ॥ वहुगुनरत्ननिधान ॥ मुक्तिकमला
कमलासन ॥ इहिविधिअनेकउपमासहित ॥ अनेक
उपमासहित ॥ अरुनवरनसंतापहरि ॥ जिनरायपाय
नषजोतिभरि ॥ नमतवनारसीजोरिकरि ॥१॥ दोधका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रबलेसप्रजापतिदेवए॥मुदितमहोदयमूलए॥अनुकं
पासिंधुअकूलए॥८५॥नीरोपमगतपंकए॥नीराहतनि
र्जितसंकए॥नित्यनिरामयभौनए॥नीरंध्रनिराकुलगौन
ए॥८६॥परमधरमरथसारथीए॥ध्वजकेवलरूपकता
रथीए॥परमवितभंडारए॥संवरमयसंजमधारए॥८७॥
सुभविगलसंतए॥सोधोदनिसुद्धसिधंतए॥नैयंभदान
पजानए॥अविगतअनंतअभिधानए॥८८॥करम
निरजरामूलए॥अघभंजनसुपदअभूलए॥अदभुतल
पअशेषए॥अवगमनिधिअवगमभेषए॥८९॥बहुगु
नरतनकरंडुए॥ब्रह्ममंडरमनब्रह्ममंडए॥वरदबंधम
रतारए॥महदंगमहानेतारए॥९०॥गतप्रमादगणपासा
निरनाथनिराथिपनिरासए॥महाजंत्रमहस्वामिए॥महदर्थ
महागतिगामिए॥९१॥महानाथमहजानए॥महपाव
नमहानिधानए॥गुनाकारगुनदासए॥गुनमेरुगंभीरवि
लासए॥९२॥करुनामूलनिरंगए॥महदासनमहारसंग
ए॥लोकबंधुहरिकेसए॥महद्दीस्वरमहद्दादेसए॥९३॥म
हविभुमहविधिवंतए॥धरनीधरधरनीकंतए॥कथावं
तकलधामए॥कारनमयकरनविरामए॥९४॥परमत
त्वसतसंपदाए॥त्रिगुनात्रिकालदरसीसदाए॥कोपदवा
नलनारए॥मदनारदहनसमीरए॥९५॥मायामोहग
यंदए॥संमोहतिमिरहरचंदए॥कुमतिनिकंदनका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्यों नर रहै दुलंभ वनारसि ॥ पाइ अजान अकारथ षो
वे ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ ज्यों जल बूडत कोइ ॥ तजि बाहन पाह
न गहै ॥ त्यों नर मूरष होइ ॥ धरम छाडि सेवत विषै ॥ ७ ॥
॥ छप्पै ॥ धर्मगाथा का ॥ जिन पुज्जहिं गुरन महिं जे
न मत वैन वषानहिं ॥ संघ भगति आदरहिं ॥ जीव हिंसा
न हिं जानहिं जानहिं ॥ झूठ अदत्त कुसील त्यागि परिग
ह परमानहिं ॥ क्रोध मान छल लोभ जीति सज्जन थि
ति वानहिं ॥ गुनि संग करहिं इंद्रिय दमहिं ॥ देहिं दान त
प भाव जुत ॥ गहि मन विराग एहिं विधि रहहिं ॥ ते जग
मैं जीवन मुकति ॥ ८ ॥ अथ पूजाको अधिकार ॥ कवि
त्त ॥ लोपै दुरित हरै दुष संकट ॥ आपै रोग रहित नित दे
ह ॥ पुंन भंडार भरै जस प्रगटै ॥ मुकति पंथ सौं करै सने
ह ॥ रचै सोहाग देइ सोभा जग ॥ परभव पहुचावै सुरगे
ह ॥ कुगति बंध दलमलै वनारसि ॥ वीतराग पूजा फल ए
ह ॥ ९ ॥ कवित्त ॥ देवलोक ताको घर आंगन ॥ राज रिद्धि
सेवैं तसु पाइ ॥ ताके तन सोभाग आदि गुन ॥ केलि विला
स करैं नित आइ ॥ सो नर तुरित तिरै भवसागर ॥ निरमल
होइ मोक्ष पद पाइ ॥ द्रव भाव विधि सहित वनारसि ॥ जो
जिनवर पूजै मन लाइ ॥ १० ॥ कवित्त ॥ जो जिनंद पूजै फु
लनि सों ॥ सुर नैनन्हि पूजा तिसु होइ ॥ वंदै भाव सहित जो
जिनवर ॥ वंदनीक त्रिभुवन मैं सोइ ॥ जो जिन सुजस भनै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गेसरिछंद॥ जैसैंकमलसरोवरिवासै॥ परिमलता
सपोनपरगासै त्यौंकविभाषहिंअक्षरजोर॥ संतभ्र
जसप्रगटहिंचहुंओर॥ जोगुनवंतरसालकवि॥ तौज
गमहिमाहोइ॥ जोकविअक्षरगुनरहित॥ तौआदरैन
कोइ॥२॥ सुपुरुषतीनिपदारथसाधहिं॥ धरमविशेष
जानिआराधहिं॥ धरमप्रधानकहैसबकोइ॥ अरथ
कामधरमहितेहोइ॥ धरमकरतसंसारसुष॥ धरमक
रतनिरवान॥ धरमपंथसाधनविना॥ नरतिरजंचसमा
न॥३॥ मनुषभवकाअधिकार॥ कवित्त॥ जैसेंपु
रुषकोइधनकारन॥ हींडतदीपदीपचढिजान॥ आ
वतहाथरत्नचिंतामनि॥ डारतजलधिजानिपाषान॥
तैसेंभ्रमतभ्रमतभवसागर॥ पावतनरशरीरपरधान॥ धरमज
तननहिंकरतबनारसि॥ षोवतवादिजनमअज्ञान॥
४॥ कवित्त॥ ज्योंजरमूरखधारिकहा[illegible]॥ षोवत
मूढकनककोषेत॥ ज्योंगजराज[illegible]रसम॥
कूरकुबुद्धिमोलषरलेत॥ जैसेंछाडिरतनचिंतामनि
॥ मूरषकाचषंडमनदेत॥ तैसेंधरमविसारिबनारसि
॥ धावतअधमविषैसुषहेत॥५॥ सवैया॥ ज्योंमति
हीनविवेकविनानर॥ साजिमतंगजईधनढोवै॥ कंच
नभाजनधूलिभरै॥ शठमूढसुधारससौंपगधोवै॥ बौ
डारिमहामनिमूरषरोवै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यान धारन विषयसुषत्याग ॥ करुनारस आदरन
॥ भूमिसैन इंद्रीनिरोधन ॥ व्रत संजम दान तप ॥ भगति
भाव सिद्धंत सोधन ॥ एसव कामन आवहीं ॥ जैं विनु
नायकसैन ॥ शिवसुष हेतु वनारसी ॥ करुव्रती तिगुर
वैन ॥ १६ ॥ अथ जिनमत का अधिकार ॥ कुंडलिया ॥
देव अदेव हि नहिं लषइ ॥ सुगुरु कुगुरु नहि सूझ ॥ ध
र्म अधर्म गिनै नहीं ॥ कर्म अकर्म न बूझ ॥ कर्म अकर्म
न बूझ ॥ गुन गुन अगुन न जानइ ॥ हित अनहित नहि
सरदइ ॥ निपुन मूरष नहि मानइ ॥ कहत वनारसि ग्या
न दृष्टि नहि अंध अवेव हि ॥ जैन वचन दृग हीन ॥
लषै न हि देव अदेव हि ॥ १७ ॥ कवित्त ॥ ताकौ मनुय
जनम सब निःफल ॥ मन निःफल निःफल जुग का
न ॥ गुन अरु दोष विचार भेद विधि ॥ ताहि महा दुर्लभ
यह ग्यान ॥ ताकौ सुगम नरक दुष संकट ॥ अगम पंथ
पदई निरवान ॥ जिनमत वचन दयारस गर्भित ॥ जे
न हि सुनत सिद्धंत वषान ॥ १८ ॥ छप्पय ॥ अंव्रत कहं
विष कहइ ॥ नीर कह पावक मानइ ॥ तेज तिमिर सम
गिनइ ॥ मित्र कह सत्रु वषानइ ॥ पुहपमाल कह नाग
॥ रतन पथ्थर सम तुल्लइ ॥ चंद किरन आतप सरूप
इह भांति जु भुल्लइ ॥ करुनानिधान अमलान गुन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रैजनताकी॥महिमाइंद्रकरहिंसुरलोइ॥जोजिन
ध्यानकरंतवनारसि॥ध्यावहिमुनिताकेगुनजोइ॥
कवित्त॥ज्योंनररहैरिसाइकोपकरि॥त्योंचिंताभयवि
मुषवषानि॥ज्योंकायरसंकैरिपुदेषत॥त्योंदारिदमें
ज्ञेभयमानि॥ज्योंकुनारिपरिहरैषंडपति॥त्योंदुरग
तिछंडैपहिचानि॥हितज्योंविभौतजेनहिसंगति॥ते
सवजिनपूजाफलजानि॥१३॥गुरकाअधिकार॥अ
भानकछंदफुनिहा॥पापपंथपरिहरहिं॥धरहिंसुभ
पंथपग॥परउपकारनिमित्त॥वषानहिमोषमग॥स
दाअवंछितचित्त॥जुतारनतरनजग॥अइसेगुरुकौं
सेवत॥भागहिकरमठग॥१४॥गीताछंद॥मिथ्यातद
लनसिद्धंतसाधक॥मुकतिमारगजानए॥करनीअ
करनीसुगतिदुरगति॥पुंनपापवषानए॥संसारसाग
रतरनतारन॥गुनजहाजविशेषियै॥जगमांहिगुरुस
मकहिवनारसि॥अउरकोइनदेषियै॥१५॥सवईया
॥मातपितासुतवंधुसषा॥जनमीतहितूसुषकामि
निपाके॥सेवकराजिमतंगजवाजि॥महादलसाजिर
थीरथनाके॥दुर्गतिजाइदुषीविललाइ॥परैसिर
आइअकेलहिजाके॥पंथकुपंथगुरूसमझावत॥
अउरसगेसवस्वारथहीके॥१५॥वस्तुछंद॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देषिगरतथानफलउपजत ॥ सहजपयारघामसु
सहोइ ॥ जाकेगुनजसजंपनकारन ॥ सुरगुरुथ
कितहोतमदषोइ ॥ सोसिरिसंघपुनीतवनारसि
॥ दुरितहरनविचरतभुअलोइ ॥२४॥ अहिंसाको
अधिकार ॥ मत्तगयंद ॥ सुकृतकीषांनि ॥ इंद्रपुरीकी
निसेनीजानि ॥ पापरजषंडनेकौंपौंनरासिपेषिये
॥ भवदुषपावकबुझाइवेकोमेघमाल ॥ कमलामिला
इवेकोंदूतिज्यौंविशेषिये ॥ मुकतिवधूसोंप्रीतिपा
लिवेकोंआलीसम ॥ कुगतकेवारदिढआगलसी
देषिये ॥ असीदयाकीजेचित ॥ तिहूंलोकप्रानी
हित ॥ औरकरतूतिकाहूंलेषेमेंनलेषिये ॥२५॥
आभानकछंद ॥ जोपश्चिमरविउगै ॥ तिरैपाषा
नजल ॥ जोउलटैभुअलोक ॥ होइसीतलअनल ॥
जौसुमेरुडगमगै ॥ सिद्धकहलगैमलतवहूंहिंसा
करतनउपजैपुनफल ॥२६॥ सवइया ॥ अगिनिमे
जैसेंअरविंदनविलोकियत ॥ सूरअथवतजैसेंवा
सरनमानियै ॥ सांपकेवदनजैसेंअंब्रितनउपजत
कालकूटषायेंजैसेंजीवननजानियै ॥ कलहक
रतनहिंपाइयेसुजसजैसें ॥ वाढतरसांसरोगनांस
नवषानियै ॥ प्रानीवधमांहिंतैसेंधर्मकीनिसानी
नांहि ॥ याहीतेंबनारसीविवेकमनआनियै ॥२७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ षगट बनारसि जैनमत ॥ परमत समान जो मन्न धरत ॥
सो अजान मूरष अपत ॥ १९ ॥ मरहट्टा छंद ॥ सुभ धर्म वि
कासै ॥ पाप विनासै कुपथ उथापन हार ॥ मिथ्यामत षं
डइ ॥ कुनै विहंडइ ॥ मंडै दया अपार ॥ तिस्ना मद मारइ ॥
राग विडारइ ॥ यह जिन आगम सार ॥ जो पूजै ध्यावै पढ़इ
पढावै ॥ सो जग मांहि उदार ॥ २० ॥ कवित्त ॥ अथ संघ का
अधिकार ॥ जैसैं नभमंडल तारागन ॥ रोहत सिषिर रत
न की षानि ॥ ज्यौं सुरलोक भूरि कलपद्रुम ॥ ज्यौं सरवर अं
बुज वन जानि ॥ ज्यौं समुद्र पूरन जल मंडित ॥ ज्यौं ससि
छवि समूह सुषदानि ॥ तैसैं संघ सकल गुन मंदिर ॥ सेव
हु भाव भगति मन आनि ॥ २१ ॥ कवित्त ॥ जे संसार भोग
आसा तजि ॥ ठानत मुकति पंथ की दौर ॥ जाकी सेव कर
त सुष उपजत ॥ जिन्ह समान उलिसन हि अवर ॥ इंद्रा
दिक जाके पद वंदत ॥ जो जंगम तीरथ सुचि ठौर ॥ जामै
नित निवास गुन संपति ॥ सो सिरि संघ जगत सिरमौर
॥ २२ ॥ कवित्त ॥ ताकौ आइ मिलै सुष संपति ॥ कीरति
है तिहूं जग छाइ ॥ जिन सौं प्रीति बढै ता के घट ॥ दिन दिन
धरम बुद्धि अधिकाइ ॥ छिन छिन ताहि लषै सिव सुंद
रि ॥ सुरग संपदा मिलै सुभाइ ॥ बानारसि गुनरासि संघ
की ॥ जो नर भगति करै मन लाइ ॥ २३ ॥ कवित्त ॥ जो के
भगत मुकति पद पावै ॥ इंद्रादिक पद गनत न कोइ ॥ जे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१० विचरहि न ॥२१॥ सवईया ॥ पावकतें जल होइ ॥ वारि
धितें थल होइ ॥ सस्त्रतें कमल होइ ॥ ग्राम होइ वनतें ॥
विवर होइ ॥ पर्वतें घर होइ ॥ वासवतें दास होइ ॥ हित्तु
रजनतें ॥ सिंघतें कुरंग होइ ॥ व्याल स्याल अंग होइ ॥
विषतें पियूष होइ ॥ माला अहि फनतें ॥ विषमतें सम
होइ ॥ संकट न व्यापे कोइ ॥ एते गुन होहि सत्य वादी दर
सनतें ॥२१॥ अदत्तादानको अधिकार ॥ रोडक छंद
ताहि रिद्धि अनुसरइ ॥ सिद्धि अभिलाष धरै मन ॥ विप
ति संग परिहरै ॥ जगत विस्तरइ सुजस घन ॥ सव आ
रति ते हित जइ ॥ कुगति वंछइ न एक छन ॥ सो सुरसंप
ति लहै ॥ गहै न हि जो अदत्त धन ॥२२॥ कवित्त ॥ ता
सो मिलै देवपद शिवपद ॥ ज्यों विद्या धन लहै विनीत
॥ ताभैं आइ रहैं सुभ पंकति ॥ ज्यों कलहंस कमलसौं
नीत ॥ ताहि विलोकि दुषदारिद ॥ ज्यों रवि आगमरैनि
वितीत ॥ जो अदत्त धन तजत वनारसि ॥ पुंनवंत सो
पुरुष पुनीत ॥२४॥ मरहठा छंद ॥ जो कारति गोपइ
॥ धरम विलोपइ ॥ करै महा अपराधि ॥ जो सुभगतिते
रइ ॥ दुरगति लोरइ ॥ जोरइ जुद्ध उपाधि ॥ जो संकट आ
नइ ॥ दुरमति ठानइ ॥ वध वंधन को गेह ॥ सव औगुन
मंडित ॥ गहै न पंडित ॥ सो अदत्त धन एह ॥२५॥ कवित्त
॥ जो परजन संताप केलि वन जो वध वंध कुबुद्धि नि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवित्त॥दीरघआउनामकुलउत्तिम॥गुनसंपति
आनंदनिवास॥उन्नतविभउसुगमभवसागर॥ती
नभुवनमहिमापरगास॥भुजबलवंतअनंतरूप
छविरोगरहितनितभोगविलास॥जिन्हकेचितद
यालतिन्हकेरूषसबसुषहोतबनारसिदास॥४८
॥सत्यवचनकौअधिकार॥छप्पय॥गुननिवास
विस्वास॥वासदारिदुषषंडन॥देवआराधनजोग
॥मुकतिमारगमुषमंडन॥सुजसकेलिआराम॥ध
मसज्जनमनरंजन॥नागवाघवसिकरन॥नीरपा
वकभयभंजन॥महिमानिधानसंपतिसदन॥मं
गलमीतपुनीतमग॥सुषरासिबनारसिदासभ
नि॥सत्यवचनजयवंतजग॥४९॥कवित्त॥जोम
समंतकरैनिजकारति॥ज्यौंवनिआगिनिदहैव
नसोइ॥जाकेसंगअनेकदुषउपजत॥वढैविरष
जैसैंसीचतजोइ॥जामैधरमककथानहिसुनियत
॥ज्यौंरविबीचछांहनहिहोइ॥सोमिथ्यामतवच
छवानारसि॥गहतनताहिविचिछनकोइ॥५०
॥रोडकछंद॥कुमतिकुरीतिनिवास॥प्रीतिप
रतीतिनिवारन॥रिद्धिसिद्धिसुषहरन॥विपति
दारिदुषकारन॥परवंचनउतपत्ति॥सहजअप
राधकलंन॥सोसठमिथ्यावचननाहिआदरत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

११ लरि आनंद होइ॥ रिपु पलटि होइ हित॥ लीला
न लौं वसमउदधिजल॥ गृह समान अटवी विक
ट॥ एहि विधि अनेक दुष होहि सुष॥ सीलवंतन
र के निकट॥४०॥ परिग्रह कौ अधिकार॥ कवित्त॥
अंतर मलिन होइ निज जीवन॥ विनसै धरम तरो
वर मूल॥ किलसै दया नीति नलिनी वन॥ धरै लो
भ सागर तन थूल॥ उठै वाद मरजाद मिटै सब॥ सु
जन हंस नहि पावहि कूल॥ वढत पूर पूरै दुष संक
ट॥ यह परिगह सरिता सम तूल॥४१॥ सवईया॥ क
लह गयंद उपजाइवे कौं विंध्यगिरि॥ कोप गीध के
अघाइवे कौं समसान है॥ संकट भुजंग के निवास
करिवे कौ विल॥ वैर भाव चोर कौं महा निसा समान
है॥ कोमल सुगुन घन षंडिवे कौं महा पौन॥ पुंन
वन दाहिवे कौं दावानल दान है॥ नीति नय नीरज
नसाइवे कौं हिम रासि॥ ऐसौ परिगह राग दुष कौ
निधान है॥४२॥ सइया॥ उपसम कौ अहित॥ अधी
रज कौ काल हित॥ महा मोह राजा कौ प्रसिद्ध राज थ
नी है॥ भ्रम कौ निधान दुरध्यान कौ विलास वन॥
विपत कौ थान अभिमान की निशानी है॥ दुरित कौ
पित॥ रोग सोग उतपति हेत॥ कलह निकेत दुर
गति कौ निदानी है॥ ऐसौ परिगह भोग सब

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वास॥ जोजगविपतिबेलिवनमंडल॥ जोदुरगपर
गास॥ जोसुरलोकवारदिढआगल॥ जोअपहरन
मुकतिसुषवास॥ सोअदत्तधनतजतसाधुजन॥ नि
जहितहेतबनारसिदास॥ ३६॥ अथसीलकोअधि
कार॥ कवित्त॥ सोअपजसकोडंकवजावत॥ लावत
कुलकलंकपरधान॥ सोचारितकोंदेतजलंजुलि
गुनवनकोंदावानलदान॥ सोशिवपंथकेवारबना
वत॥ आपतविपतिमिलनकोथान॥ चिंतामनि
समानजगजोनर॥ सीलरतननिजकरतमलान॥
३७॥ रोडकछंद॥ कुलकलंकदलमलइ॥ पापम
लपंकपषारै॥ दारुनसंकटहरै॥ जगतमहिमाबि
स्तारै॥ सुरगमुकतिपदरचै॥ सुक्रतसंचैकरुनार
सि॥ सुरगनवंदहिंचरन॥ सीलगुनकहतबनारसि
॥ ३८॥ सवईया॥ ताकौंनबाघभुजंगमकोभय॥ पानी
मबोरैनपावकजालै॥ ताकेसमीपरहैंसुरकिंनर
॥ सोसुभरीतिकरइअघटालै॥ तासुविवेकबढैघट
अंतर॥ सोसुरकेशिवकेसुषभालै॥ ताकीसुकीरति
होइतिहूंजग॥ जोनरसीलअषंडितपालै॥ ३९॥ छ
प्पय॥ अगिनिनीरसमहोइ॥ मालसमहोइभुयंगम
॥ नाहरमृगसमहोइ॥ कुटिलगजहोइतुरंगम॥ विष
पियूषसमहोइ॥ सिषरिपाषानषंडमित॥ विघन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ मैंआमदइसमैंकउनलेसकहूं॥संकलेसरूपफंदइक
इजूंझिमरइरनमइ॥तजइनिजधमकउविरामपरे
सधावइ॥सेवइप्रभुद्रुपनमलीनरहइमनमइ॥दो
लइधनकारजअनारजमनुजमूढ॥अइसोकरतूति
करइलोभकीलगनमइ॥५७॥सवईया॥पूरनप्रता
परविरोकिवेकोधाराधर॥सुकृतसमुद्रसोषिवेकों
कुंभनंदहइ॥कोपदपावकजननकोंअरनिदाह
॥मोहविषभूरुहकउंमहादिढकंदहइ॥परमविवेक
निसिमनियसिवेकोंराहु॥कीरतिलताकलापदले
नगयंदहइ॥कलहकोकेलिभौनआपदानदीको
सिंधु॥अइसोलोभयाहीकोविपाकदुषदंदहइ॥
५८॥छप्पय॥परमधर्मवनदहइदुरितअंवरगति
धरइ॥कुजसधूमउदगरइभूरिभयभसमविथारइ
॥दुषफुलिंगफुंकरइतरलतिस्नाझरकढइ॥ध
नइंधनआगमसंजोगदिनदिनअतिवढइ॥ल
हलहइलोभपावकप्रवल॥पवनमोहउद्धतवहइ
॥दझहिंउदारतादिकवहु॥गुनपतंगकोराकह
इ॥५९॥कवित्त॥विलसइकामधेनुभंडारभरइचिं
तामनि॥तिन्हकोसुलभसुरगअरुमोषतेनराव
स्यकरइंत्रिभुवनकों॥तिन्हसौंविमुषरहइंदुष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

म॥ अथ मकोपाजिनरनातिछंदइ॥५१॥ चौपईछंद
॥ मान विषम विषतन संचरै॥ विनै विनासै वंछित
हरै॥ कोमल गुन अंब्रित संजोग॥ विनसै मान विष
म विषरोग॥५२॥ मायाकौ अधिकार॥ रोडकछंद॥
कुसल जनन कहं वांझ॥ सत्तर विहरन सांझ थिति
॥ कुगति जुवति उरमाल॥ मोह कुंजर निवासछिति
॥ समवारि जहि मरासि॥ पापसंताप सहाइनि॥ अज
सषानि जगजानि॥ तजहु माया दुषदाइनि॥५३॥ वि
सरछंद॥ मोह मगन माया मति संचै॥ करि उपाउ अ
उरनि कौ वंचै॥ अपनी हानि लषै नहि सोइ॥ सुगति
दुरै दुरगति दुष होइ॥५४॥ पद्धडीछंद॥ माया अवि
मास विलास गेह॥ जो करइ मूढ जन धन सनेह॥ सो
कुगति वंधन हि लैहि सम॥ जिमि भय बिलाउ पय पिवइ जे
म॥५५॥ आभानकछंद॥ ज्यउं रोगी करि कुपथ वढा
वइ रोगतन॥ त्याद्दले पटी मयउं कहइ मुझ जन मध
न॥ त्यउ कपटी करि कपट मुगुध कउं धन हरइ॥ कु
रइ कुगति कउ वंध हरष मन महिं धरइ॥५६॥ इतिश्री
मायाधिकार समाप्तः॥ अथ लोभ अधिकार लिख्यते॥ स
वईया॥ महइ घोर संकट समुद्र की तरंगनि मइ॥ कं
पइ चित भीत पं थ्याइ हइ वीझवन मइ॥ ठानै कृषिक

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५ जाल वसि॥ ए चरित्र सज्जन करहिं॥६४॥ इति सज्ज
नाधिकार समाप्तः॥ अथ गुनिसंगाधिकार लिष्यते॥ स
वईया॥ सो करुना विनु धर्म विचारत॥ नैन विना ल
षिवेकौं उमाहै॥ सो दुरनीति धरै जस हेतु॥ सुधी वि
नु आगमकौ अवगाहै॥ सो हिय सुंन कवित्त क
रै॥ समता विनु सो तप सौं तन दाहै॥ सो थिरता वि
नु ध्यान धरै सठ जो सतसंगति जे हित चाहै॥६५
सवईया॥ कुमति निकंद होइ महा मोह मंद होइ
जगमगै सुजस विवेक जगै हियै सौं॥ नीतिकौ
दिढाउ होइ विनैकौ वढाउ होइ॥ उपजै उछा
ह ज्यौं प्रधान पद लियै सौं॥ धर्मकौ प्रगास होइ दुर्ग
तिकौ नास होइ॥ वरतै समाधि ज्यौं पियूष रस पि
यै सौं॥ तोष परि पूरि होइ दोष दृष्टि दूरि होइ॥ एते
गुन होंहि सत संगतिके कियै सौं॥६६॥ कुंडलीया॥
कौं राते मारग गहैं जे गुनि जन सेवंत॥ ग्यान कला
तिन्हकै जगै ते पावहिं भव अंत॥ ते पावहिं भव अंत
संत रस ते चित धारहिं॥ ते अघ आपद हरहिं धर्म
कीरति विस्तारहिं॥ होंहिं सहज जे पुरुष गुनी वानि
ज केसौं रा॥ ते सुरसंपति लहैं गहैं ते मारग कौंरा॥
६७॥ छप्पय॥ जो महिमा गुन हरै तुहिन जिम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दोष॥ वसइ निधान सदा तिन्ह कइ हिग॥ तिन्ह
कइ हिरदइ वसत संतोष॥६०॥ इति लोभाधिकार
समाप्तः॥ अथ सज्जनाधिकार लिष्यते॥ चौपाई छंद॥
पकू अहि वदन न हछु निज डारहिं अगिनि कुंड म
हं तन पर जारहिं॥ दारहिं उदर करहिं विष भक्षन
॥ मै दुष्टतान गहहिं विचक्षन॥६१॥ सवईया॥ ज्यौं कृ
षि कार भयो चित वातुल॥ सो कृषि की करं नीइ मठा
नइ॥ वीज ववइ न करइ जल सिंचन पावक सौं फल
कौ थल भानै॥ त्यउं कुमती निज स्वारथ कइ हित॥ दु
र्जन भाव हि म्म हं आनइ॥ संपति कारन वंध विदा
रन॥ सज्जनता सुष मूल न जानइ॥६२॥ आभानक छं
द॥ वस्त्र दरिद्रता होउ करत सज्जन कला॥ दुराचा
र सौं मिलइ राज सो नहि भला॥ ज्यउं सरीर कृस मह
जसु सोभा देइ हइ॥ सुजि मूल भाव दइ मरन कौं हे
उ हइ॥६३॥ छप्पय॥ नहिं जंपहि पर दोष॥ अल्प प
र गुन वहु मानहिं॥ हरइ धरहिं संतोष दीनत्त वि
करुना ठनहिं॥ उचित रीति आदरहि विमल नय
नीति न छंडहिं॥ निज सलहन परिहरहिं गाम
चि विषय विहंडहिं॥ मंडहिं न कोप दुर्वचन सुनि
सहज मधुर धुनि उच्चरहिं॥ कहि कवर पाल जग

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ अंगके आचारा॥ हितकारी वइन वूठे हइं॥ आगम
के पाठी॥ मन लांपइ महा कारी॥ भारी कष्टके सहन
हारा॥ रमा हूसौं रूठे हइं॥ इत्यादिक जा वस व कार ज
करत रीति॥ इ इन्हु के जीते विना सरवं गरूठे हइं॥७१
॥सवईया॥ धर्मत रूमं जन कौं महा मन्त्र कुं जरसे॥ अ
॥पदा भंडार के भरन कौं करोरा हइं॥ सत्य सालरोकि
वे कौं पोटे पर दारजइसे॥ दुर्गति कौ मारग चलाइवे
कौं मोरी हइं॥ कुमत के अधिकारी॥ कुनइ पंथ के वी
हारी॥ भद्र भाव ईंधन जराइ वे कौं होरा हइं॥ मृषा के
सहाई॥ दुरभाव ना के भाई॥ अइसे विषया मिला
षा जीव अघ के अघोरी हइं॥७२॥ इति इंद्रियाधिक
रसमाप्तः॥ अथ कमलामिकार लिष्यते॥ सवईया॥
नाच कि ठं रदरइ सरिता जिम॥ घूंमवदा वतिनीर
कि नांई॥ चंचलता प्रगटैं चपला जिम॥ अंधकरइ
जिम धूम कि झांई॥ तेज करै तिसनाइव ज्यतुं मइज्य
तुं मद पोषति मूढ कि नांई॥ ए करतूति करइ कमला
॥जगडोलति ज्यउं कुलटा विनु सांई॥७३॥ सवई
या॥ वंधुविरोध करै निसिवासर॥ दंडन कौं नरव
इ छल जोवइं पावक दाहत नीर वहावत॥ कइई डि
गत्तुंट निसाचर होवइं॥ भूतल रुलत जकइ हरइ। के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वारिजवारइ॥ जो भवताप संहरइ पवन जिम मेघघ
टा रइ॥ जो समदम दल मलइ दुरद जिम गउपवन षं
डइ॥ जो सछेमें छप करइ वज्र जिम षिषिर विहं
डइ॥ जो कुमति अग्नि इंधन सरिस कुनय लता दिढ
मूलजग॥ सो दुष्ट संग दुष पुष्ट कर जजहिं विचक्षन
तासु सग॥ ६८॥ इति गुनि संगाधिकार समाप्तः॥ अथ इंद्रि
याधिकार लिष्यते॥ गीता छंद॥ जे जगतजनकौं कुप
थ डारहिं वंक सिषित तुरंग से॥ जे हरहिं परम विवेक
जीवन॥ काल दारुन उरग से॥ जे पुन्न विरष कुठार ती
षन गुपुत व्रत मुद्रा करइं॥ ते करन सुभट प्रहारि म
विजन॥ तव सुमारग पग धरइं॥ ६९॥ सवईया॥ ए
ई हैं कुगति के निसानी दुष दोष दानी इन्हीं की सं
गतिसों संग भार वहियइ॥ इनकी मगनतासों विभौ कौ
विनास होइ॥ इन्हीं की प्रीतिसों अनीति पंथ गहि
यइ॥ एई तप भाव कौं विडारें दुराचार धारइं॥ इन्हीं
की तपति विवेक भूमि दहियइ॥ एई इंद्री सुभट इन्हि
जीतइ सोई साधु॥ इनकौ मिलापी सोई महापापी
कहियइ॥ ७०॥ सवईया॥ मौन के धरैया गृह त्यागके
करइया॥ विधि रीति के सधइया॥ पर निंदासों अपूठे
हइं॥ विद्या के अभ्यासी॥ गिरि कंदरा के वासी॥ सुचि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३ तैमथ न निज चित कौ ॥ मूरष कहै थे सो वै परमश्रव
श्रिवा तहां न विचार कछु हित अन हित कौ ॥ वांणा
रसी दास तो मैं निज ग्यान गेह आं पे लोकन की
गारि सो सिंगार सम कित कौ ॥ २४ ॥ नं चलता बाल
वें सफो रां दे दे सूमि फिरै घर तर सम साश्व मतं देषे श्र
मते ॥ असे पर समे का उ णांत सतौ पर वंध उ दई
क भाव मूढ पावै न मरम तै ॥ निज हत मानै तौ तै
घट न विशेष वानै वदन पर जा इया हां कविन
कर मतै ॥ वांणारसी दास वै मे विकल विभाउ छू
टे ॥ बुद्धि विश्राम पावै सुभाव सुधर मतै ॥ २५ ॥ अ
त्र क्षमरि बिछौ घणों लोकन को घेर घार दास मत छ
रूप सुस नेह नासा नारा है ॥ सेन चारि सजि के दि
रां ने दे स हो हो फेरा सार फेर करै मानू चौ परका स
री है ॥ कहत वनारसी वजावै औं सावे ख्वै रराग
रमरा थ्यें दिन च्यार हा का वारी हइ ॥ छल्यो न षज
नो न षजानो न षजान चाको षोज पायो ॥ राज षि
स जाइ गौष जानै वि नु ख्वार है ॥ २७ ॥ जा ग्यो रा इवे
तन सह जदल जुरि आए मुरे करम रिपु भाव मन
मे उमाहि वौ ॥ सर हद मई या का लो कर अलो
क पार इं इ चंद चित वन चो पक रिवा हि वौ ॥ वा
णार सी दास सय्या ता य्या ता मे लवनि आ इ आं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लराजूमापकीतलकमे॥केईसागरचेषेलेवर
षअसंषिकोटिकेईसागफेरिलाचेपलकपलक
मे षेले॥षेलेजेतेजंततायेषेलत्तिअनंतगुणा॥वा
नारसीग्यातानाजाणोज्योतिकीजलकमे॥षेलेतेबहु
तष्यालदेषेतेअलपजंतुदेषेतेभाषेलिबेठ्याल
हैषलकमे॥३२॥गुरुमुषतेबषसंतबषभेसुतमे
रकालबधिकलचेपादरम्यानकी॥जामगीअग
मबुद्धिजोगतपयोगसुद्धिंजकअरथज्वालाला
गीसुमध्यानकी॥इतग्यातादलततमोहसेनआ
इवणी॥वाणारसीदासजूकुमकलेजोग्यानकी
॥जोबेनअवस्थाजाकेबंदूषकीगोलालागेजोगे
नमिथ्यातजोतोगोलीलागेग्यानकी॥३१॥घटमै
विकटघाटउलटउरधवाटपरगुणसाधैतेअनंत
कालतेथकी॥सुकमनिआदिइलापिंगलाकी
मोजभईषटचक्रवेधिगेणजातेमनमथकौं॥सु
लयौहैकूंमलवाराणसीविशेषताकौंसतनुवेक
ीरछामईजिणमतग्रंथकौं॥ऐसीहीजुगतिपाये
जोगनिछिमाधे॥जोगनिछिमाधेतेसिधावेसिद्धि
पंथकौं॥३३॥ॐचमतिहानकहैसोमौनद्वैकेव
लीपेकहैकर्मदीनसोतोमिपरमितकौ॥धिग्या
गारीदेवैधीयामारसनअैसीधरामेंथकेमिलाप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

२८ तातें दुःख में विचार कौ यौ पावन तोहि रागीजन में वे
से नरको ॥२०॥ ठाउ मृग ग्रम नाभि पुदगल गुणा वि
थुरी पवन मैं विशेष ढूँढे वन में ॥ मा हिबके को
जमूढ अष्ट गाजु ने केठौर तन नकों जो भिन्न जाणी
नौ तौ ने रेतन में ॥ कंथ ही मृदंग को ज भूरघ वि भार
गयो ॥ सो तो उपयोग ग सो चोभ पौरा न जन में ॥ वा
णारसीदास जाहि को जहाँ जगत फिरै सो तो का
न मरै जिणदेव के वचन में ॥२१॥ डूल्यौ नि निगो
द को कुकाल पड़डा कि आयो प्रत्येक शरीर पं
च थावर में नै धस्यौ ॥ तीनि विगलिंद्री ई दी पंच में
प्रकारि च्यारि नरक तिर्यग् देव कुनि कुनिसं च
रयो ॥ वाणारसीदास अबनर भव कर्मभूमि में ठौ
मे दकी नो मोक्ष मारग में पैथस्यो ॥ चेतिरे चतुरन
र अजहूं न कैंसोंन चेतै ॥ इहै अवतार आपे एते प
ऊ तस्यो ॥२२॥ दुठे लूण सागर मैं ने कहूं नदी ल
करे खार जल वसे ताके प्यार जल पैनदी ॥ सीत
वटी मातो हरिकें तारना ज्ञोत स्वाद स्वादी होइ मे
ई स्वादै को कुका कौं देन ही ॥ समर विभाव सिंधु
सम मांसु भाव स्रोत वाणारसी लाभै ताकौं भ्रम
न कौ भैन द ॥ ली गी म वहे सरि षो सु भाव ग्यान ग
ङ्गि रा होत ताछी सोई जा तो भै या कहि दे कौं टेन

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छतै छूत विना औसो हो निवाहिवो ॥ षजानें कुं
सुमध्यानग्यान कौ षजानो पूरो सूरो आपुसों है
वसुथिर औसोसो हि वी ॥२७॥ झागफु ई वा मेयौमें
कौचफेन फेलि रहे त्रिबल तरंगरंग रहो उनमें आ
वता ॥ वांमें तिनकार षनधान परिगह पांमे वांमें
मलपंक पाहि वंचडोरू भावता ॥ बाणारसीदास
वांमें आवत अनेक भांति यह कुलकों डिगो नि
जांति दोषलावता ॥ वह्यो जात जलतामें ऐतें कुहि
भावत है आतम वहिरतामें कहां तें सुभावता ॥२८
॥ निज काज सब हूं कौ अध्यातम मेलमांझ ॥ मूढ
कोन षोजि देषे षोजै और वांनमें ॥ सदा यहै सठ
रीति सुणी है वांनारसी जू वचन प्रमाद नै कण
तन केकांनमें ॥ चेराजै सैमलिम लिक्षेवत विश
नै पाय परमन रंजिवे कौं सांझ रिहां निमें ॥ नि
ज पाव कौं न ध्यावे कौ ऊसषा औसो कहे ॥ मोसो
कोऊ आलस ना और नजिहांन में ॥२९॥ टेक
करि मूरिषविरा ता घरि टिकि रह्यो ॥ जानें मेरे
है घर मैं भी पाहो घर कौ ॥ घर परमार यन कौं न
ना ये भ्रम घेर ठौर विना औ रठौर अध रप धरें
॥ पंच कौ मषा यो करें पर पंच वंचडोरु संग्रह मे
रकोपो मोसों तो पिरपर कौं ॥ बांणारसी दास ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ वे जगत पहस्तुतपतरूमुनिविहं गमेव हिं सुपित ॥८४॥ इति तपाधिकारसमाप्तः॥ अथ भावनाधिकार लिष्यते॥ कवित्त॥ ज्यौं नी राग पुरुष पुरकामिनिक राहु करि ऊंदरी॥ ज्यौं धनत्यागरहितसुसेवन ॥ कूं सरस ई बरषा जिम बूठी॥ ज्यौं सिलमा हि कमल कौ वेवन॥ पवन पकरि ज्यौं बंधीय मूठी॥ एकर दति हों हि जिम निःफल त्यौं विनु भाव क्रिया सब झूठी॥ ८५॥ सवईया॥ पूरब करम दहइ सरवग्य पद लहइ गहइ पुन पंथ फिरि पाप मइ न आवना॥ करुना की कला जागइ॥ कठिन कषाय भागइ॥ लागइ दान सील तप सफल सुहावना॥ पावइं भव सिंधु तट षोलइ मोष द्वार पट॥ सर्म सा धि धर्म की धरा मइं करइं धावना॥ एसे सब काज काज करइ अलष कौ अंग धरइ वेली चिदानंद की॥ अकेली एक भावना॥ ८६॥ सवईया॥ प्रसम के पोषिवे कौं अंमृत की धारा सम॥ ग्यान वन सिंचिवे कौं न दी नीर भरी हइ॥ चंचल करन मृग बंधिवे कौं वागरा स काम दव माल नासिवे कौं मेघ झरी हइ॥ प्रबल कषाय गिरि भंजिवे कौं वज्र गदा॥ भव समुद्र तारिवे कौं पोढी महा तरी हइ॥ मोष पंथ गाहिवे कौं वेसरी विलाइ न की॥ अइसी सुद्ध भावना सदैव धारी हइ॥ ८७॥ आमानक छंद॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्वालमालसंहरनमेघझर॥जोप्रचंडइंद्रियभुजंगद
मनसुमंत्रवर॥जोविभावसंतमसपुंज॥षंडनदुभा
तकरजोलवधिवेलित्रपजंतिघट॥तासुमूलदिढता
सहित॥सोसुतपअंगबहुविधिदुविधिकरहिविसु
षवंछारहित॥८१॥सवईया॥जाकेआदरतमहा
रिद्धिसौंमिलापहोइ॥मदनअव्यावहोइकर्मवनदा
हियइ॥विघनविनासहोइगीरवानदासहोइग्यान
कौप्रकासहोइभौसमुद्रथाहीयइ॥देवपदषेलहोइ
मंगलसौंमेलहोइ॥इंडिनकौजेलहोइमोषपंथगा
हियइ॥जाकाअइसीमहिमाप्रगटकहइकौंरपाल
तिहूंलोकतिहूंकालसोनपसराहियइ॥८२॥सवई
या॥ज्यउंवरकाननदाहनकौंदवपावकसौनहि
दूसरोदासइ॥ज्यउंरवआगिवुझइनतक्षनजोन
अषंडितमेहवरीसइ॥ज्यउंप्रगटइनहिजवलगिमा
रुत॥तवलगिघोरघटानहिषीसइ॥त्यउंघटमइंत
पवअविनादिढकर्मकुलाचलअउरनपासइ॥८३॥
॥छप्पय॥सुदिढमूलसंतोषप्रसमगुनप्रबलपु
इधुव॥पंचाचारसुसाषसीलसंपतिप्रवालकुवअ
भयअंगदलपुंजदेवपदपुहूपसुमंडित॥सुकतमा
ववित्तारभारसिवसुफलअषंडित॥परतीतिधार
जलसिंचिकिप॥अतितुतंगदिनदिनप्रसित॥जय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रातंधम्मगइ॥ विषइसुषसौंज कौ विचारइ विषपोषह
इ॥ लषइ यौं विभूति ज्यउं भसम कौं विभूति कहइं॥ व
निता विलासमइं विलोकइ दिढ दोषहइ॥ अइस
उ जानि त्यागइ यह महिमा विराग ताकी॥ ताहि कौं
विरागमही ताकै ढिग मोषहइ॥ २२॥ इति वैराग्या
धिकार समाप्तः॥ अथ उपदेस गाथा लिष्यते॥ सव
ईया॥ करइ परमेसुर की अरचा॥ विधि सौं गुर कौं वं
पसमर्पन कीजइ॥ दान विलोकि दया धरियइ चित
॥ प्रासुक दान सुपत्रहं दीजइ॥ गाहक क्रूर गुन कौं
गहिपइ॥ रुचि सौं जिन आगम कौं रस पीजइ॥ ए
करनी करियइ ग्रहमइं वसि॥ यउं जगमइं नर भौ
फल लीजइ॥ २३॥ गीता छंद॥ जो करइ साधि त्रि
काल सुमिरन॥ जासु जस जग विस्तरइ॥ जो सुन
इ परमागम सुरुचि सौं॥ नीति मारग पग धरइ॥
जौ निरषि दान र पाप जुंजइ॥ काम क्रोधादिक ह
रइ॥ जो सुधन सपत्र सुषेत षरचइ॥ ताहि सिव सं
पति वरइ॥ २४॥ वस्तु छंद॥ देव पूंजहिं रचहिं गु
रु सेव॥ परमागम रुचि धरहिं॥ तजहिं दुष्ट संगति
नतकुल॥ गुनि संगति आदरहिं॥ करहिं त्याग दुर
भक्ष्य भक्षन॥ देहिं सुपत्रहं दान नित॥ जपहिं पं
च नवकार॥ एकरनी जे आचरइ॥ ते पावहिं [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गहि॥ सुनीत आचार जिनागम जो वन॥ करि तपु मं
त्र मदान भूमिका सो वन॥ एक रन् सब विफल हो
हिं विनु भावना॥ ज्यौं तुस बोए हाथ धूं न हि आवना
॥८८॥ इति भावनाधिकार समाप्तः॥ अथ वैराग्या
धिकार लिष्यते॥ सवईया॥ अस्तुमता धूलिहरिवैंकैं
नीर पूरसम॥ विमल विरति कुलवधू कौ सोहाग है इ॥
उ हित मदन जुर नासिवे कौं जुरंकुस॥ अह गज थंभ
न कौं अंकुस कौ दाग है इ॥ चंचल कुमन कपि रोकिवे
कौं लोह फंद॥ कुसल कुसम उपजाइवे कौं वाग है इ॥
सुधी मोष मारग चलाइवे कौं नाभी रथ॥ अइसो हित
कर भव भंजन विराग है इ॥८९॥ आभानक छंद॥ जो
तें सभीर गंभीर घनाघन छय करइ॥ वज्र विनासइ सि
षिरि॥ दिवाकर तम हरइ॥ ज्यौं तें दव पावक पूर दहइ ब
न कुंज कौं॥ त्यौं भंजइ वइराग करम के पुंज कौं॥९०॥
कवित्त॥ कीनी तैं सुदेव की पूजा॥ ति निगुर चरन कम
ल मन लायौ॥ सो वन वास वस्यौ निस वासर॥ तिनि श्रुत
वंत पुरुष गुन गायौ॥ ति नित पलियौ कियौ इंद्रिय दम॥
सो पुनि विद्या पढि आयौ॥ सव अपराध गए ताकौं त
जि॥ जिनि वइराग रूप धन पायौ॥९१॥ सवईया॥ जा
कौं भोग भाव दीसइ कारे नाग के से फन॥ राज कौ समा
ज दीसे जैसौ रज कौ षहइ॥ जाकौं परिवार कौ बढाउ यौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६ उद्धत मुकति पंथ सोपान ॥ ए गुन प्रगट होंहि तिन्ह
के घट ॥ जो नर देहिं सुपात्रहिं दान ॥ ७७ ॥ छप्पय ॥ सो
दारिद दल मलइ ॥ ताहि दुरभाग न गंजइ ॥ सो न लहइ
अपमान ॥ सुतौ विपदाभय भंजइ ॥ तिसु न कोइ दुष
देइ ॥ तासु तन व्याधि न वढइ ताहि कुजस परिहरइ ॥
सु मुष दीनता न कढइ ॥ सो लहइ उच्चपद जगत महि ॥
अर्थ अनरथ नास हि सरव ॥ कहि कवरपाल सो ध
न्न नर ॥ जो सु षेत बोवइ दरव ॥ ७८ ॥ सवईया ॥ ताही कौं
सब ढिवरइ रमाता की चाह करइ चंदन सरूप कि
इ सुजस ताहि अरचइ ॥ सहज सुहाग पावइ सुरगस
मीप आवइ ॥ वार वार मुकति रमनि ताहि चरचइ ॥ ता
ही के सरीर कौं अलिंगति अरोगताई ॥ मंगल करइ
मिताई प्रीति कैरै परचइ ॥ जोई नर हइ सुचेत चित्त समु
झि लेत ॥ धरम के हेत कौं सुषेत धन षरचइ ॥ ७९ ॥ क
वित्त ॥ ता कीरति कीरति दासी सम ॥ सहस्रा राजरिद्धि
घर आवइ ॥ सुम ति सुनाउ पजइ ताके घट सो सुरलो
क संपदा पावइ ॥ ता की दिढिल षइ सिवमारग ॥ सोनि
रबंध भावना भावइ ॥ जो नर त्यागि कपट कौं राकइ
इं विधि सौं सपत षेत धन वावइ ॥ ८० ॥ इति दानाधिक
ार समाप्तः ॥ अथ तपाधिकार लिष्यते ॥ छप्पय ॥ जो पू
रब कृत कर्म पिंड गिरि दलन वज्रधर ॥ जो मन मथ दव

जगतमे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिकरइदुष्टनिकुसंततिषोवइ॥ एउतनपतनउद
इधनकइटिग॥ रामधनीकउकयउंसुषसोवइ
॥७४॥सवईया॥ नीचधनवंतताहिनिरषिअसी
सदेइ॥ वहनविलोकइयहचरनगहतुहै॥ वहअ
कृतग्यनरयहअग्यताकोधरइ॥ वहमदलीनय
हदीनताकहतुहइ॥ वहचितकोपठानइ॥ यहवा
कौंप्रभुमानइ॥ वाकेकुबचनसवयहइपइसह
तुहइ॥ अइसीगतिधारइनविचारइकछूगुन
दोष॥ अरथाभिलाषीजीवअरथचहतुहइ॥
७५॥सवईया॥ नीचहीकीतरकौउमंगिचलइक
मला॥ सुपितासिंधुसलिलसुभाउयाहिदियोह
इ॥ रहइनसथिरकहइसकंटकचरनपाको॥ वसी
कंजमाहिकंजकोसोपदकियोहइ॥ जाकौंमिलइ
हितसोंअचेतकरिडारइताहि॥ विषकीवहिनं
तातइंविषकोसोहियोहइ॥ अइसीठगहारीजिनि
धरमकेंपथडारी॥ करिकइसुकृततिनियाको
फललियोहइ॥७६॥इतिकमलाधिकारसमाप्तः॥
अथदानाधिकारलिष्यते॥कवित्त॥ चरनअषंडग्य
ानअतिउजल॥ विनयविवेकप्रसमअमलीन॥
अनघसुभाउसकृतगुनसंचय॥ तुंअअमरप
दवंधविधान॥ आगमगम्यरम्यतपकीरुचि॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२० रूप यहै सुद्ध आतमा ॥४॥ सुंधवा ज्ञ हृदय भयौ ॥
सुद्धता विसरि गयौ ॥ पर गुन रंगि रह्यौ ॥ पर ह्रां को
रु षिया ॥ निज निधि निकट विकट भई नैन वितु
षिन कमैं सुषी तातै षिन कमैं दुषिया ॥ समकित
जैल विनाचिंषित अनादि काल विषय वल्लि अर कषाय
णामै दुषिया ॥ वानारसीदास जिनरीति विपरीति
विपरीति विपरीति जा कौ ॥ मेरे जाने ते तो नर मूढनि
मैं मुषिया ॥५॥ अनभव ग्यान जैते निदान आनमानु
मैं छु ट्यौ सरधान वान वान छूटै हैं द्रव्य करमै ॥ करम
उपाधि रोग लोग भोग जोग गगते भोगी नियाजोग
करामाति हू कौं तरमै ॥ दुर्गति विषाद न उछाह सु
र भवन वास समता सुछिति आतमीक मे घवरसै
अरसरस सि
॥ वाणारसीदास जू के वदन रमन रसिया ते अरस
कौं परसे ॥६॥ आवरण समल विमल भयौ ताकै तु
ले मोह आदि हि एौंका हू काल गुणा कसीया ॥ लीन
भयौ लिव लागी मगन विभाव त्यागी जोति कै उद्यो
त होत निज गुण पसिया ॥ वाणारसीदास निज आ
तम प्रकास भए आवै ते न जाइ एक ऐसे वास वसि
या ॥ सर्व रस परम दरस आप ही अनंत जंत सुरसम
रसा चे सोई सा चौ रसिया ॥७॥ इसही सुरस के सवा
दी भए जे तौ निंछं कर चकवर्ति ॥ मैं ली अध्यातम की

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिगुण त्रिकाल तातें व्यय ध्रुव्य उतपात अपातकौं
सुहात बात नहीं ताग पहलेकौं ॥ बाणारसीदास
जूके हृदय मैं ॐकार वास ऐसौ परकास ससिपक्ष के
सुकलकौ ॥१॥ निरमल ग्यानके प्रकार पंच नरलो
कतामैं अमृत म्यान परक्षं नकरि पायो है ॥ ताकै मूल
दोइ रूप अक्षर अनक्षर मैं अनक्षर अय पिंड सैं न मे
वतायो है ॥ बावन वरन ताके असंख्यात मं निपा
त तामैं न पउंकार सज्जन सुहायो है ॥ बानारीदास
अंग द्वादश विचार यामैं ऐसो उंकार कंठपाठ तो
हि आयो है ॥२॥ महामंत्र गायत्री कै मुखि ब्रह्मरूप मं
उ आतम प्रदेशकै ई पद प्रकाश है ॥ तापर अशो
क वृक्ष छत्र ध्वज चामरसौं पवन अगनि जलवसेए
के वास है ॥ मारीके अकार तामैं रुद्ररूप चितवत म
हात बाम हाव्रत तामैं बकु भास है ॥ ऐसे उँकार कौ अ
मूल चूल मूलरस बानारसीदासजू के वदन विला
स है ॥३॥ सिद्ध रूप शिव रूप भेष अव भेष रूप नर
रूप न्याय रूप विध रूप वातमा ॥ गुरु रूँ पान रू
प प्पायक गंभीर रूप भोग रूप भोगी रूप सुर सह
हातमा ॥ एक रूप आदि रूप अगम अनादि रूप
असंख अनंत रूप जीति रूप जातमा ॥ बानारसी
दास द्रव्य पर्याय व्यवहार रूप सुद्धता स्वभाव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९ मनलावनी ॥ गुणवंत पुरुषके गुणकारतनकी
जैपीतंबर श्रीतिकरिस ज्ञान सुहावनी ॥ वहै अधि
कार आयो अंघतैं विद्या यो पायो कुकमपसारतै
भई है ग्यानबावनी ॥५०॥ सोलहसै संवत छियासी
पै उं आरमासपष उजलाई चंद चढिवे को चाउहै
॥ विजेदसादिन आयो बुधपरगासपायो उन्नरअषा
ढउडई है वडो रावहै ॥ बांणारसीदासगुणजोगहै स
कलबानमो रिषउभानगिरकरणाकहावहै ॥ एकै
तौ अरथसुभमकुरतवरणउइसरै अरथयामेह
जो वरणावहै ॥५१॥ ह्रैतवंत जे तेता कै सहजउदारचि
त आगे कहूं एतौ वरदान मोहि दीजीयो ॥ उत्तिमपुरु
ष श्रीवांणारसीदासजसपंनगसुभाइ एकध्यानमे
सुणीजीयो ॥ पवनसुभायविसतारका जेदेसदेस
मंमरसुभायनिजस्वादरसपीजीयो ॥ बावनकवि
त एतो मेरी मतिमानभए हंसकैसुभाइ ग्याताग्राण
हीलीजीयो ॥५२॥ इति श्रीबांणारसीदासबावनी
सवइया ५२॥ संपूर्णं ॥ अथ श्वेतांबर निर्णयपंचासिका
चूडामणि छंद ॥ जंगमविलोचनजगतहित ॥ जगता
रनजगजानवंदौजगगुरुउमनिजगनायकजगतप
भान ॥१॥ नमौरिषभस्वामीप्रमुषजिनिचौवीसमहं
त ॥ गुरुचरनचितनरषौमुषमाषौंवेदविरतंत ॥२॥ स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करैमेरीसोभकौ॥ ऐसोबलंतरदेषीओहूनपसु
सीभयोसेनापतिथापोजेसैयहभारलोसकौ॥ ध
मधनभरोमेरैऔरकांमकछुनाहिसुषविसरा
मसोनपावैकहुंयोभकौं॥ वांणारसीदासग्याता
ग्यानमेविचारिहैयौलोकनकौंलोभलागोला
गेलोगलोभकौं॥४७॥ बावनवरनएहीसदतव
रणच्यारिकाइपढेग्यानवडेकाइडुषडुंदजू॥ व
रणभंडारिपंचवरणरतनसारभारहीभंडारभाष
वरणसुछंदजू॥ वरणथैंईभिंनतोसेवरणमेष ति
भासेसुगुणसुणनताहिहोतेहैअनंदजू॥ वाण
रसीदासजिणवाणीवरणवकीयोतेरीवाणी
वरणवकरैवडेविंदजू॥४८॥ शाकेश्रीयमाल
सुरग्यानजिनदासस्रुणोमूलदासवंशवडेविर ताके
दवधायोहै॥ षिनिमेषगटअतिभयोहैषरसेनं
वाणारसीदासताकौअवतारआयोहै॥ वीहोली
यागोतगरवानउद्योतहोत॥ आगरेईअभंगता
हिमेरैसतुपायोहै॥ वांणारसीवाणारसीषलकव
षाणकरैताकैंवंसगामकामनामगुणग[illegible]ोहै
॥४९॥ षांतकरिमंदिरकपूरचंदसाहवैठेवैठेकुंव
रपालसभाजुडीमनिभावैनी॥ वांणारसीदासजू
केवचनकीवातचलीयाकीकथाऐसीग्यानागम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ दिनर॥ इनकौ चरित्र अरु गुन कथन प्रथम वेद प
है मे दर्षर॥७॥ अथ द्वितीय वेद यथा॥ छप्प
य॥ अगम अनंत अलोक अक्रत अनमित अपे
उसम॥ असंख्यात परदेस पुरुष आकार लोक न भ
ऊरध मुरज अधो पताल न र लोक मध्य सुव॥ द्वीप
असंख्य उदधि असंख्य मंडलाकार सुव॥ तिस मध्य
अढाई द्वीप लगु पंच मेरु सागर जुगम॥ यह मनु
ष्य षेत्र परवान छिति सुर विद्याधर कौं सुगम॥७॥
सवैया इकतीसा॥ सोलह सुरग नव ग्रीव नव अनु
त्तर पंच पंचानुत्तर ऊपर सिद्ध सिल है॥ ताऊप
र सिद्ध षेत न तहां है अनंत सिद्ध षेत न तहां है अनं
त सिद्ध एक मैं अनेक कोऊ काहू सौं न मिला है
॥ अधो लोक पताल की रचना अनेक विधि नी
[illegible] सात नरक निवास बहु बिला है॥ इत्यादि जग
त थिति कही जु वेद मांहि सोई जीउ मानै जि नि
मिथ्यात उगिला है॥८॥ अथ तृतीय वेद यथा सवै
या इकतीसा॥ मिथ्या करन तिनाषी सासादनी
[illegible]भाषी मिश्र गुनथान कहीं राषी मिश्र करनी
सम[illegible]रागा मारक हो नाना परकार श्रावक अ
[illegible]सुल प्रकार संघर नी परमाद सु निकी क्रिय
[illegible] छ्यक रूप भाषी मुनि राज की क्रिया प्रमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सवईया ॥ इकतीसा ॥ केवलीउकतवेदअंतरगुपुत
भए ॥ जिन्हकेसबदमेअमृतरसचुवाहै ॥ अबरिगु
वेदजजुर्वेदसामअथर्वनइनहीकापरभावजगतमे
हुवाहै ॥ कहतबनारसीतथापिमैकहुंगोकबुतेई
समुझैंगेजिन्हकामिथ्यातमुवाहै ॥ मतवालामूरष
नमानैउपदेसजैसेउलुवानजानैकेहिंउरभानउ
॥ आरोह णा ॥ कहै माहैहैविदपंचासिका ॥ जिनवानीपरवान ॥ नरअज
नजानैनहीं ॥ जोजानैसोजान ॥ ४ ॥ ब्रह्मानामजुग
दिजिन ॥ रूपचतुर्मुषधारि ॥ समोसरनमंडानमे ॥
वेदवषानेचारि ॥ ५ ॥ सवईया ॥ इकतीसा ॥ प्रथम
पुनीतप्रथमानुयोगवेदजामेत्रेसठिसलाकामहा
पुरुषकीक[illegible]है ॥ दूजावेदकरनानुयोगजाकेग
रभमैवरनीअनादिलोकालोकथितिप्रथाहै ॥ च
रनानियोगवेदतासरोप्रगटजामेमोषपंथकार
नआचारसिंधुमथाहै ॥ चौथावेददरवानियोगजा
मेदरवकेषटभेदकरमउछेदसरवथाहै ॥ ६ ॥
अथप्रथमवेदयथा ॥ छप्पय ॥ तिर्थंकरचवाम
कामचौवीसमनुजतनु ॥ जिनमाताजिनपितासदं
लचालीसअरगनु ॥ चक्रवर्तिद्वादसप्रवानएक
दससंकरनवप्रतिहरिनववासुदेवनवरामसुभं
कर ॥ कुलकरमहंततचौदहपुरुषनवनारदसुभ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६ न भगवांन भगवान भाव मै ॥४३॥ मोषि चलिवे कौं
पंथु मूल पंथु रंथकै कजौं पंथु बल हा तता हि सु
परथ सारसी ॥ सहज समाधि जोग साधिवे कौं रंग
भूमि परम अगम पद पदिवे कौं पारसी ॥ भव सिंधु
तिरवे कौं सबद धरे है पोत ग्यान घटा पाये सूत लेगुर
डैडारसी ॥ समकितै नैन नकौं पाकै वैन अंजन से आ
तम निहारवे कौं आरसी वनारसी ॥४४॥ जिनवां
नी दुगध मै सुमति विजया डारि निज स्वाद कंद ब्रिं
द चहल पहल मै ॥ विवेक विचार उपचार एक सै
मोकीनो ॥ मिथ्या सोफी मिटि गए ग्यान के गहल
मै ॥ सीरणी सुकल ध्यान अनहद नाद तान गांन गु
नमांन करै सुजस सहल मै ॥ वांणारसी दास मध
नायक सभा समूह अध्यातम सैली सैल मोक्ष के
महल मै ॥४५॥ रसातल ते लेपंच गोल हो अनंत
जंतता मै रोक रासि अंतिस्ह भैस रूप है ॥ कटुक
मधुर जो लौ अगनि तै भिनताई सनि गिधु भा एक
जैसे ते लत रूप है ॥ जैसे कोऊ जांत अंध चौइंदी न
कहीइतइ वि कौं विचारै मूढ भाव कौं न रूप है ॥ वां
णारसी दास प्रभू वीर जिण अैसो कह्यो आतम अ
[illegible] पा सो भी सिद्ध रूप है ॥४५॥ लक्ष कोटि जो
रे जो रि कंद नअै बारि वो एक रमां मै पाकौ पतौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रासब्रह्मअगमअगाजहै॥ जैसेवासितवैसैलोइओ
मैतैसीबुद्धिहोइजैसीबुद्धितैसीक्रियाक्रियातै
सोकाजहै॥५०॥ फिटकपषांणदेषैमोतीकरिमं
नैकोऊषुंघचीरकनकहारतनसमांनहै॥ हंसम
गसेतकोऊसेतकोनहैतउहां॥ रीरीपारीभईक
हांकंचनकेवानहै॥ भेषभगवांनकैसमांनकोऊ
ग्यानभयेमुद्रकोमंडाणकाहामोक्षकोसथान
है॥ वांणारसीदासग्यातांग्यांनमैविचारदेष्योका
यजोगकैयोहोहगुणपरधानहै॥५१॥ वेदपाठव
लेब्रह्मकहैपैविचारबिनाशिवकोईलिनजा
निसैवगुणगावहीं॥ बोधकहैबुद्धरूपकाहूं ए
कदेसवसैन्यायककरणाहारतरंधवतावहीं॥
जैनपरजतनजतननिजभिन्नजाणै बांणारसीद
सचारवाकधुंधधमवहीं॥ बहोदरसंनमांहिछि
तोआहिछिपिरह्योछद्मोनमिथ्यातनमेषेपगर
नपावही॥५२॥ भेषधारिकोटिकनदीहैलषपै
रासीमैविनागुणगपानपायें॥ वडोनविसाउभै
॥ गुरुभगवांनतेंभीभगवानश्रांतिछुटैभावैनंसु
गुरुभाषजैसेषीरतावमै॥ बांणारसीदासग्यातां
भगवानमेरपायोभयोहैछद्मोहतेरेवचनकेहै
मै॥ भेषधारमानैभेयाभेषपदेभगवानभेषपे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ ॥ब्रह्मारिषभदेवतनवंदूं॥४५॥दोहरा॥रिषभदेवब्र
ह्मामए॥किएवेदजिनिचार॥नाममेदमतभेदसौंव
ढीजगतमेरारि॥४६॥ब्रह्मलोकवर्णनं॥चौपाई॥
औरउकतिमेरेमनआवै॥साचीवातसवनिकौंभा
वै॥ब्रह्माब्रह्मलोककोवासी॥सोविरतंतकहूंपरगा
सी॥४७॥कुंडलीया॥ऊपरसवसुरलोकेंकेब्रह्मलो
कअभिराम॥सोसरवारथसिद्धितसुपंचानुत्तर
नाम॥पंचानुत्तरनामधामएकाअवतारी॥तहंसुर
वभववसैरिषभजिनसमकितधारी॥ब्रह्मलोक
सौंचय॥भएब्रह्माइहिंभूपर॥तातेलोककहानदे
वब्रह्मासवऊपर॥४८॥चौपाई॥आदीसुरजुगादि
सिवगामी॥तीनलोकजनअंतरजामी॥रिषभदे
वब्रह्माजगसाषी॥जिनिसवजैनधर्मविधिभाषी
॥४९॥रिषभदेवकेअगनितनांऊं॥कहौंकहांलौंपा
रनपाऊं॥वैअगाधमेरीमतिहीनी॥तातेकथासमा
पतकीनी॥५०॥छप्पैया॥इहिविधिब्रह्माभएरिष
भदेवआदिदेवमुनि॥रूपचतुर्मुषधारिकरीपरग
टजिनिवेदधुनि॥तिन्हकेनाउअनंतग्यानगरभि
तगुननूझे॥मैंतेतेवरनएअरथजिन्हजिन्हकेबू
झेयहसवदब्रह्मसागरअगमपरमब्रह्मसुगाज
तसहित॥किमलहइबनारसिपारपद॥नरवि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ब्रह्मारवी॥ तियमिलीनैमभानाम॥३६॥ चौपाई॥ मु
नुभएमहामुनिजवहीं॥ नांउस्वयंभूभगतिनवहीं
॥ ध्यानारूढहोइतपसाधै॥ परमब्रह्मकहिजगता
आराधै॥३७॥ भरतषंडकेज्ञानीजेते॥ प्रजाभरतजा
केजेते॥ भरतनरेसरिषभकीसाषा॥ तातेलोकपि
तामहभाषा॥३८॥ केवलज्ञानरूपजवहोई॥ तवरुद्र
भाषैसवकोई॥ कंचनगढगर्भितजिनभासे॥ नांउ
हिरन्यगर्भपरगासे॥३९॥ दोहरा॥ कमलासनपरवै
ठिकै॥ देउधर्मउपदेस॥ चमरछत्रलषिजगकहै॥
कमलासनलोकेश॥४०॥ चौपाई॥ आतमभूमि
पदरसावै॥ तवआतमभूनांउकहावै॥ सकलजीव
कीरक्षाभाषै॥ नांउसहस्रपातजगराषै॥४१॥ सभो
सरणमहंचौमुखदीसै॥ चतुराननकहिजगतीस
सीसै॥ अक्षरविनावेदश्रुतिभासै॥ रचनारचिग
नधरपरगासे॥४२॥ चारिवेदकहिएनवसेती॥ द्वाद
शांगकीरचनाएती॥ जवश्रुतिमुनिअनंतामाहि
ए॥ तवप्रभुअनंतागहिए॥ तवप्रभुअनंतनामक
हिए॥४३॥ आदिअनादिआदीसुरजोई॥ आदिअंत
विनुकहिएसोई॥ कैजगतइन्हींकीप्रजा॥ एईब्रह्मा
औरनदूजा॥४४॥ जवलौंजीवमृषा[illegible]दौरै॥ तवलौं
[illegible]॥ जवमम[illegible]कित[illegible]न[illegible]मैम[illegible]॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२ ॥ पमसुदरशननामभूयहरिनरसिंघनरेस ॥५॥
सोरठा ॥ मघवनामचक्रेश ॥ चक्री सनतकुमारहू
॥ चक्री सांतिमरेस ॥ भयो सांतिजिन सांतिकर ॥६॥
वस्तुछंद ॥ कुंथुचक्रीश कुंथुसरवगपअरहसारव
भौमहुव ॥ अरहजिनेशपहलादप्रतिहरिबलम
द्रसुनंदिहुव ॥ पुंडरीकहरिबंधुतसुयरि ॥ सारव
भौमसुनौमहुव ॥ वलिप्रतिहरिहुवतार ॥ नंदिमि
त्रबलिदेवहित ॥ केशवदत्तकुमार ॥७॥ सोरठा ॥
महुमचक्रिजिनमल्लि ॥ विजयसेनषटखंडजि
त ॥ मुनिसुव्रतहरिमल्लि ॥ चक्रवर्त्तिहरिषेनहु
व ॥८॥ वस्तुछंद ॥ भयो रावन१नामप्रतिहरस ॥ रघु
नंदनरामहुववासदेवलछिमनगनिज्जउ ॥ नमि
जिनवरनेमिजिन ॥ जरासिंधप्रतिहरिमनिज्जउ ॥ ह
लधरपदुममुरारिहरिब्रह्मदत्तचक्रीस ॥ पीसजि
नेसरुवारजिनएनरतीनत्रिवीस ॥९॥ सोरठा ॥ त्रिभु
वनपंहितदार ॥ त्रेसठिपदउत्तमसहितजिय ॥ आविभू
तउपचार ॥ वंदैचरनवनारसी ॥१०॥ अथतीर्थंकर
नामछप्पय ॥ रिषभअजितसंभवजिनंद ॥ अभिनंद
सुमतिधर ॥ श्रीपदमप्रभस्रीसुपासचंद्रप्रभुजिन
वर ॥ सुविधिनाथशीतलश्रेयांसजिन ॥ वासपुज्ज
वर ॥ विमलअनंतसुधर्मशांतिजिनकुंथुनाथअर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेकभुजबलरहित ॥५१॥ इति श्री वेदनिर्णय प
चासिकासमाप्तः ॥ अथ सिलाकानामपुरुष ॥ व
स्तुछंद ॥ नमौं जिनवर२४ देवचउवीस ॥ नरद्वादश
चक्रधरनवमुकुंदनवप्रतिनरायन ॥ नवहलधं
रसकलमिलि ॥ प्रभुत्रिसहिसिवपथपरायन ॥ प ८
महंतत्रिभुवनमुकुटपरमधरमधनधाम ॥ जैं
जैं अनुक्रमअवतरे ॥ त्यौंत्यौं वरनौंनाम ॥१॥
सोरठा ॥ केईतदभवसिद्ध ॥ निकटभव्यकेईपु
रुष ॥ मृषागंद्दिनरविद्ध ॥ सुमतिसिलाकाधर
सकल ॥२॥ वस्तुछंद ॥ रिषभजिनवर१ भरतच
क्रीस ॥ सिरिअजितजिनेसहुव ॥ सगरचक्रिसं
भवतिर्थंकर ॥ अभिनंदनसुमतिजिन ॥ पदुम
परभसुप्पाससंकर ॥ श्रीचंद्रप्रभुसुविधिजिन
॥ सीतलजिनसिरिअंस ॥ अस्वग्रीवप्रतिहरि भ
यो ॥ हलधरविजयसुवंस ॥३॥ सोरठा ॥ हरितिवि
ष्टिजिनजीय ॥ वासुपूज्यजिनद्वादशम ॥ तार
कप्रतिहरिवीय ॥ हलधरअचलदुविष्टिहरि ॥
४॥ वस्तुछंद ॥ विमलजिनवर१ मेरुप्रति विष्णु
वलधर्मस्वयंभुहरिजिनअनांमंधुप्रतिहमोद
र ॥ वलसुप्रभनामहुव पुरुसोतमहरितासुसो
दर ॥ धरमजिनेशनिसुंभप्रतिनारायननरेस ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

 दीपंच॥सकलठीकगनिबासठिसंच॥५॥इन्हकेन
भेभेदविस्तार॥वरनोजिनवानीअनुसार॥बासठिरू
 पस्वांगधरिजीउ॥करैनृत्यजगमांहिसदीउ॥६॥प्रथ
मअंजमरूपविशेष॥देससंयमाइजाभेष॥तीजोसा
मायकसुषधाम॥चउथबेदउपथापननाम॥७॥पंच
मपदपरिहारविसुद्धि॥सक्ष्मसंपरायषटबुद्धि॥ज
थाष्यातचारितसातमा॥सातौंस्वांगधरैआतमा॥८
भव्यअभव्यस्वांगधरिदुधा॥करइजीवजगनाटकमु
सुधा॥अनाहारआहारीहोउ॥नौंचेजीवस्वांगधरि
दोइ॥९॥कबहूंक्रोधअगिनिलहलहइ॥कबहूंअ
ष्टमहामदगहै॥कबहूंमायामईसरूप॥कबहूंम
हालोभरसरूप॥१०॥चारिकषायचतुर्विधिभेष॥धरि
जियनाटककरैविशेष॥कहूंचक्षुदरशनसौंलषै॥
कहूंअचक्षुदरसनरसचषै॥११॥कहूंअवधिदरस
नपरजुंज॥कहूंसुकेवलरसनपुंज॥धरिदरसनमा
रगनाचारि॥नाटकनटैजीउसंसारि॥१२॥कुमतिरूप
मिथ्यामतिलीन॥कुस्रुतिकुआगममेपरवीन॥धरै
विभंगाअवधिअजान॥सुमतिग्यानसमकितपर
वान॥१३॥सुश्रुतिग्यानपरमागमसुनइ॥सुअवधि
ग्यानयथारथमुनै॥मनपरजैजनैमनभेद॥केव
लग्यानप्रगटसववेद॥१४॥एईआठग्यानकेअंग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥द्वादसचक्रवर्तिनाम॥भरतसगरमघवासनतकुमार
शांतिकुंथुअरसुभौमपद्मचक्रधरहरिसेनजयसेनब्रह्मदत्त

॥श्रीमल्लिनाथत्रिभुवनतिलक॥मुनिसुव्रतनमिने
मिजर॥पारसजिनेसवीरेसपदनमतवनारसिजोरि
कर॥११॥अथनवनारायननाम॥दोहा
॥अश्वग्रीवतारकमेरु॥मधुनिसुंभप्रहलाद॥बलि
राजारावनजरासिंधुसुप्रतिहरिदिवाद॥१२॥नाराय
ननाम॥त्रिविष्टिदुविष्टिस्वयंभू॥पुरुसोत्तमनरसिं
स॥पुंडरीकदत्ताधिपति॥लछिमनहरिमधुरेस॥
१३॥अथबलिभद्रनाम॥विजयअचलबलज
र्मधर॥सुप्रभसुदरशननाम॥सुनंदिनंदिमित्रेसर
घुनथपदुमनवनाम॥१४॥इतित्रिसठिसलाका
पुरुषनामकथनं॥अथमार्गनाविधानलिख्यते॥
वंदौदेवजुगादिजिन॥सुमिरिसुगुरसुषभषि॥नै
दहमारगनाकहौं॥वरनौबासठिसाष॥१॥चौपाई
॥संजमभव्यअहारकषाइ॥दरसनग्यानजेगति
काइ॥लेश्यासमकितसैनीवेद॥इंद्रीसहितचतुर्दस
भेद॥१॥एचौदहमारगनासार॥इनकेवासठिभेदउदा
र॥वांसठिसंसारीजीयभाग॥इनहितलंघिहोइसिव
राग॥२॥संयमसातभव्यविविभाइ॥दुविधिअहार
चारिकषाइ॥दरसनच्यारिआठविधिग्यान॥जोग
तीनिगतिचारिविधान॥३॥षटकायालेश्याषटहो
इ॥षटसमकितसैनीविधिदोइ॥वेदतीनिनिर्दिष्ट

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४ वेदत्रिनअगिनितछाह। त्रियवेदीकारीसादाह॥ ५४॥
वनदवदाहनपुंसकवेद। नटेजीउधरिरूपत्रिभेद।
थावरमांहिएकेंद्रीहोइ। त्रससंषादिकइंद्रीदोइ॥ ५५॥
पिपालिकादिकइंद्रीतीनि। चौरिंद्रीजियभ्रमरादिनि। पं
चेंद्रीदेवादिकदेह। सबवासठिमारगनाएह॥ ५६॥ जी
वतजीयमारगना। रूपताकैकालवसैभवकूप। जब
मारगनामूलउछेद। तबजियआपैआपअभेद॥ ५७
॥दोहरा॥ एवासठिविधिजीउके। तिनसंबंधीभाउ।
तजितनबुद्धिवनारसी। कीजेमोषउपाउ॥ ५८॥ इ
ति बावासठिमारगनासमाप्तः॥ अष्टकर्मप्रकृति
विधानलिख्यते॥ वस्तुछंद॥ परमसंकर१परमभग
वान। परमब्रह्मअनादिसिव। अजअनंतगजपति
विनायक। परमेस्वरपरमगुरुपरमपंथउपदेसदा
यक॥ इत्यादिकबहुनामधरजगतबंधुजिनराज
॥तिन्हकेचरनवनारसी। वंदैनिजहितकाज॥ १॥
दोहरा॥ नमौंकेवलीकेवचन। नमौंआतमाराम
॥कहूंकरमकीप्रकृतिके। भिन्नभिन्नपरनाम॥ २
॥चौपाई॥ एकैकरमआठविधिदीस। प्रकृतिएकसौ
अठतालीस। तिन्हकेनामभेदविस्तार। वरनौंजि
नवांनीअनुसार॥ ३॥ प्रथमकरमग्यानावरनीय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नैचनरकमसाउगहेसुषरंव विकुगतिज मनमरा ५

॥नचइजीउइनरूपरसंग॥मनोजोगमयहोइकह
त्रि॥बोलैवचनजोगसौंराचि॥२५॥काइजोगमहंम
गनसुकीउ॥नाचइत्रिविधजोगधरिजीउ॥सुरगति
पाइकरैसुषभोग॥समसुषदुषनरगतिसंजोग॥
२६॥बहुदुषअलपसुषीतिरजंनकलेस॥नरैजीउना
नारसमेस॥२७॥पृथिवीकायदेहजियधरै॥अपका
इमैंहोइअवतरै॥अगिनिकाइमैंतपतसुभाउ॥वा
उकाइमैंकहिएवाउ॥२८॥वनसपतीरूपीदुषमूल
॥लहित्रसकायधरैतनमूल॥षटकायाषटविधि
अवतार॥धरिधरिमरैअनंतीवार॥२९॥धरैकृस्नले
श्या परिणाम॥नीललेसमयआतमराम॥फिरिधा
रैलेस्याकापोत॥जहजपीतलेस्यामयहोत॥३०॥चेत
नपदुमलेसपरवान॥करैसुकललेश्यारसपानक
हि विधिषटलेश्यापरपाइ॥जगवासीसुभअसुभ
कमाइ॥३१॥धरिमिथ्यातरूठसरदहै॥वमिसमकि
तसासादनगहै॥सत्यअसत्यमिश्रसमकाल॥साधै
षायकसमकितचाल॥३२॥उपसमबोधधरैबहु
वार॥वेदइवेदकरूपविचार॥धरिषटसमकितसां
गविधान॥करैतत्पाजियजानअजान॥३३॥सैनीह
पअसैनीरूप॥दुविधिसांगजियधरैअनूप॥पुरुष

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

२८ गास ॥७१॥ दोहरा ॥ सुभ विहाय गति के उदै । भली चा
ल जिय धार ॥ असुभ विहाय उदोत सौं ॥ ठानै असुभ वि
हार ॥७२॥ पद्धडी छंद ॥ अब कहौं ग्यारमी प्रकृति संच
॥ जो वर्न्न भेद परकार पं
च ॥ सित अरुन पीत दुति हरित स्याम ॥ ए वर्न्न प्रकृति के
पंच नाम ॥७३॥ जो वर्न्न प्रकृति जाके उदोत । ता कौ शरी
र तें हिं वर्न्न होत ॥ रस नाम प्रकृति बारमी जानि ॥ सो पंच
भेद विवरन बषानि ॥७४॥ कटु मधुर तिक्त आमल क
षाइ ॥ रस उदै रसीला होइ काइ ॥ जाकौं जो रस प्रकृति उ
दोत ॥ ता कौ तन तैं सो स्वाद होत ॥७५॥ तेरह्मी प्रकृति
गंध मय होइ ॥ दुरगंध सुगंध परकार दोइ ॥ जो जीव
जो प्रकृति कौ रै बंध ॥ तिस उदै तासु तन सोइ गंध ॥७६॥
अब फरस नाम चौदह्मी बानि ॥ जिसके हैं आठ भेद ष
बषानि ॥ चीकना रूछ कोमल कठोर ॥ लघु भारा सी
तल तपत जोर ॥७७॥ दोहरा ॥ प्रकृति चीकना के उ
दै ॥ गहै चीकना देह ॥ रूषा प्रकृति उदोत सौं ॥ रूषी का
या गेह ॥७८॥ कठिन उदै सौं कठिन तन ॥ मृदु उदोत
मृदु अंग ॥ तपत उदै सौं तपत तन ॥ सीत उदै सीतंग ॥
७९ ॥ पद्धडी छंद ॥ जहि भारी नाम प्रकृति उदोत ॥ तह
भारी तन धर जीव होत ॥ लघु प्रकृति उदै धर जीव जे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब॥ऊवजअकारनामहैतास॥६२॥लघुरूपीलघु
अंगविधान॥सोकहिएवामनसंठान॥जोसरवंगअ
सुंदरहुंड॥सोसंठानकहावेहुंड॥६३॥कहीआठमी
प्रकृतिबभेद॥अबनौमीसंघननिवेदहै॥संघनन
हाडकोनाम॥सोषटविधिथंभेतनधांम॥६४॥वज्र
कीलकीलितसंधान॥ऊपरवज्रपटबंधान॥अंतर
हाडवज्रमयचाच॥सोहैवज्ररिषभनाराच॥६५॥जह
सबहाडवज्रमयजोइ॥वज्रमेषसोअविचलहो
इ॥ऊपरवेढरूपसामान॥नामवज्रनाराचवषान
॥६६॥वज्रसमाननहींहिजहंहाड॥ऊपरवज्ररहितपट
आड॥वज्ररहितकीलीसोविद्ध॥सोनाराचनामप्र
सिद्ध॥६७॥जाकेहाडवज्रमयनांहि॥अरधवेधकी
लीतिसमांहि॥ऊपरबेढबंधननहिहोइ॥अर्द्धना
राचकहावैसोइ॥६८॥जहांनहोइवज्रमयहाड॥
नहिपटबंधनकीलीगाड॥कीलितबतदिढबंध
नहोइ॥नामकीलिकाकहिएसोइ॥६९॥जहांहाड
सोंहाडनबंधै॥अमिलपरस्परसंधिनसंधै॥ऊपर
नसाजालअरुचाम॥सोसेवटसंघननाम॥७०॥
यहसंघननषटविधिवरनई॥नौमीप्रकृतिसमापति
भई॥दसमीप्रकृतिगमनआकास॥ताकेदोइभेदप्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रैरासिअनंतकार॥सोसुपतिष्टितकहिएसुभाइ॥८९
॥जामैंनहिंहोइनिगोदधांम॥सोअपतिष्टितप्रत्ये
कनांम॥अवसाधारनवनसपतिकाइ॥सोसूछिम
बादरदुविधिथाइ॥९०॥सूछिमनिगोदजगमैंअमेय॥
बादरयहहैजानामधेय॥धरिभिन्नभिन्नकारमनका
इ॥मिलिजीवअनंतइकत्रआइ॥९१॥संग्रहहिंएक
नोकर्मदेह॥तिसकारननामनिगोदएह॥सोपिंड
निगोदअनंतरासि॥जियरूपअनंतानंतभासि॥९२॥
भरिरहेलोकनभमैंसदीव॥ज्योंघडामांहिभरिरहेंघी
व॥सूछिमअरुबादरदोइसोष॥फुनिनित्यअनि
त्यदुभेदभाष॥९३॥जेगोलकरूपीपंचधाम॥अंडरपं
डरइत्यादिनाम॥तेसातनरककेहैविजानि॥तिन्हंहे
ठुषकौंनसकेंवषानि॥९४॥दोहरा॥एकनिगोदशरी
रमैंजीवअनंतअपार॥धरैजनमसबएकठेमरैंएक
हीवार॥९५॥मरनअठारहवारकरि॥जनमअठारहवे
व॥एकस्वाससउस्वासमैं॥यहनिगोद[illegible]मैं॥एतेजी
वबषानि॥तीनिकालकेसिद्धसब॥एकअंसपरवा
न×कीटेल॥९६॥एकनिगोदशरीरमैं॥एतेजीवबषानि
॥तीनिकालकेसिद्धसब॥एकअंसपरवान॥९७॥वै
ठनसिद्धअनंतता॥घटैनरासिनिगोद॥जेसेकैतैसे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इ॥ अति हरुई काया धरै सोइ॥ ८०॥ ए पिंड प्रकृति दस
चारि भाष॥ इनहीं के पैंसठि कही साष॥ अब अठा
ईस अपिंड वानि॥ तिन्ह के गुन रूप कहौं वषानि॥
८१॥ जब प्रकृति अगुरुलघु उदै देइ तब जीव अगुरु
लघु तन धरेइ॥ उपघात उदै सो अंग व्याप जासौं दुष
पावै जीव आप॥ ८२॥ परघात उदै सो होइ अंग॥ जो क
रै औरकौं प्रान भंग॥ उस्वास प्रकृति जब उदै देइ॥ तब
नीसास उसास लेइ॥ ८३॥ आतप उदोत तन यथा भानु
होत उदै तन ससि समान॥ त्रस प्रकृति उदै धर जीव जो
इ॥ जंगम शरीर धरि चलै सोइ॥ ८४॥ थावर उदोत धर
प्रान धार॥ लहै थिर शरीर न करै विहार॥ सूक्ष्म उदोत
लघु देह॥ जास सो मारे मरै न और पास॥ ८५॥ बादर उ
दोत न थूल होइ॥ सबही के मारे मरै सोइ॥ पार्याप ति
प्रकृति उदै करंति॥ जिय पूरी पर्यापति धरंत॥ ८६॥ जो
प्रकृति अपर्यापति धरेइ॥ सो पूरी पर्यापति न लेइ॥ प्र
त्येक प्रकृति जाके उदोत॥ सो जीव वनसपति काय हो
त॥ ८७॥ जर तुचा काठ फल फूल पात॥ जहिं बीज स
हित जियरासि सात॥ जो एक देह मैं जीव एक॥ सो जी
वरासि कहि ए प्रत्येक॥ ८८॥ प्रत्येक वनसपति दुवि
धि जानि॥ सुप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित वषानि॥ जो भ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

इसोअंध॥ अचक्षुदरसनावरनबंधेव॥ सबदफरस
रसगंधनवेव॥१३॥ अवधिदरसनावरनउदोत॥ विम
लअवधिदरसननहिहोतकेवलदरसनसअवरज
हां॥ केवलदरसनहोइनतहां॥१४॥ थानगद्धिनिद्रा
वसिपरै॥ सोप्रानीविशेषबलधरै॥ उठिउठिचलेक
हैकिछुवात॥ करैप्रचंडकरमउतपात॥ निद्रानिद्र
उदैसुकीउ॥ पलकउघाडिसकेनहिंजीउ॥ प्रचला
प्रचलाजावतकाल॥ चंचलअंगवहैमुषलाल॥१६॥
निद्राउदैजीवदुषभरै॥ उठैचलेवैठैगिरपरै॥ रहैअं
षिप्रचलासोषुली॥ आधीमुद्रितआधीषुली॥१७॥
सोवतमाहिसुरतिकछुरहै॥ वारवारलघुनिद्रागहै
॥इतिदरसनावरननवप्रकार॥ कहेहैंवेदनीदेप्रकार
॥१८॥ दोहा॥ सातकरमउदोतसों॥ जीवविषैंसुषवे
द॥ करमअसातकेउदै॥ जीववेदेदुषषेद॥१९॥ चौपा
ई॥ अबमोहिनीदुविधगुरुभनै॥ इकदरसनइक
चारितहनै॥ दरसनमोहतीनिविधिदास॥ चारितमो
हविधानपचीस॥२०॥ प्रथममिथ्यातमोहकीदोर
॥जियसरदहैऔरकीऔर॥ दूजामिश्रमोहकीचाल
॥सत्यअसत्यगहैसमकाल॥२१॥ स[illegible]कितमोहती
सरीदसा॥ कैमलीनसमकिरसा॥ अबबकष[illegible]सो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनिसबजीवग्यानीकीय॥ दु[illegible]दरसन[illegible]
पहार॥ जीकीरं टअलषकरतार॥४॥ नीजा[illegible]रम[illegible]
नीजानि जासौं निराबाधगुनहानि॥ चौथामहामो
ह जिनभनै॥ जोसमकितअरु चारितहनै॥५॥ पं
मआउकरमपरधान॥ इनैसुद्ध अवगाहप्रवान॥
छठानामकरमविरतंत॥ करै जीवकौमूरतिवं[illegible]॥
ई॥ गोतकरमसातमा बषानि॥ जासौंनीचऊंच
लमानि॥ अष्टमअंतराइ विघान॥ करैअनंत[illegible]
तिकोघात॥७॥ दोहरा॥ एईआठैकर्ममल॥ इनमैं
भ्रमितजीव॥ इनहित्यागि निरमलभयो॥ सो सिध
पसदीव॥८॥ चौपाई॥ कहुंकर्मतरुडालसी[illegible]
ह्नजिएकसौअठतालीस॥ मतिग्यानावरनी [illegible]
र्म॥ सोआचरि[illegible]षैमतिधर्म॥९॥ स्रुतिग्यान[illegible]
बलजहां॥ सुभस्रुतग्यानफुरैनहितहां॥ अवधि ग्यान
आवरनउदोत॥ जियकौंअवधिग्याननहिहो[illegible]॥
१०॥ मनपर्यैआवरनप्रवांन॥ नहिउपजैमनपर्यैग्या
न॥ केवलग्यानावरनीरूप॥ तामैंगाभित केवलरूप
॥११॥ दोहरा॥ वरनीग्यानावरनकी॥ प्रकृतिपंचपर
र॥ अबदरसनआवरनतरु॥ कहौंनासनवडार॥१२
॥ चौपाई॥ चक्षुदरसनावरनीबंध॥ जो[illegible]पकै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

३६ ॥चौपाई॥ नगरदाहसमपरगटदीस॥ गुपतपजावाअ
गिनिसरीस॥ महाकलुषताधरैसदीव॥ वेदनपुंसक
धाराजीव॥३२॥दोहरा॥ अबवरनौंतियवेदकौ॥ रच
नासुनिगुरुभाष॥ कारीसाकीसीअगिनि॥ गर्भितब
लअभिलाष॥३३॥ ज्यौंकारीसाकीअगिनि॥ धुंआनप
रगटहोइ॥ मिलिगिमिलिगिअंतररहै॥ रहैंनिरंतरसो
इ॥३४॥ त्यौंवनितावेदीपुरुष॥ बोलैंमीठेबोल॥ बा
हिरसबजगबसिकरैं॥ भीतरकपटकलोल॥३५॥ क
पटसौंआपुकौं॥ करैकुगतिकौबंध॥ पापबंधतुप
देसदे॥ करैऔरकौंअंध॥३६॥ आपाइतिऔरनिरू
तैं॥ वनितावेदीसोइ अबलछनताकेकहौं॥ पुरु
षवेदजोहोइ॥३७॥ ज्यौंतिनपूलाकीअगिनि॥ दी
सैसिषाउतंग॥ अलपरूपआतापधर॥ अलपका
लमैंभंग॥३८॥चौपाई॥ तैसैंपुरुषवेदधरजीवधर्म
कर्ममैंरहैसदीव॥ महामगनतपसंजममांहि॥ ज
गतावेतनकोदुषनांहि॥३९॥ चितउदारउद्धतपरि
नाम॥ पुरुषवेदंधरिआतमराम॥ तीनिमिथ्यातप
चीसकषाइ॥ अठाईसप्रकृतिसमुदाइ॥४०॥ अ
वसुनुआउचारिपरकार॥ नरपसुदेवनरकथिति
धार॥ मानुषआउउदैनरभोग॥ जहितिरजंचआउ
पसुजोग॥४१॥ देवआउसुरपदविष्यातनरकआ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लहविधिकहैं नोकषाइनौविधिसरदहैं॥ नोकषा
इनौविधिसरदहैं॥२१॥प्रथमकषायकहावैकोप
जाकेउदैषिमागुनलोप॥दुतियकषाइमानपर
चंड॥विनैबिनासकरैसतषंड॥२३॥तीजीमायारूप
कषाइ॥जाकेउदैसरलताजाइ॥लोभकषाइचउ
र्थमभेद॥जासुउदैसंतोषउछेद॥२४॥दोहरा॥
एईचारिकषायमल॥अनुक्रमसूछमथूल॥चारौं
कीजेचौगुने॥चंदकलासमतूल॥२५॥चौपई॥
अनंतानुबंधिआकषाय॥जाकेउदैनसमकितप
थाइ॥अप्रत्याख्यानिपाउदोत॥पंचमगुनथानक
नहिंहोत॥२६॥प्रत्याख्यानकहावैसोइ॥जहांसर्बसं
जमनहिंहोइ॥सोसंजलननामगुरभनै॥जथाख्या
तचारितजोहनै॥२७॥क्रोधमानमायाअरुलोभ॥
चारौंचारिविधिसोभ॥एकषायसोलहदुषक्षम॥
अबनवनोकषाइकेनाम॥२८॥रागदोषकोहांसी
जोइ॥हासकषाइकहावैसोइ॥सुषमैंमगनहोइजि
यजहां॥रतिकषाइरसवरनैतहां॥२९॥जहांजीवकौं
कछुनसुहाइ॥तहांमानियेअरतिकषाइ॥थरह
रकंपैआतमराम॥जामैंसोकषायभेनाम॥३०॥
दोहरा॥रुदनविलापवियोगदुष॥जहांहोइसोसो
ग॥जहिगिलानिमनउपजै॥सोदुरगंछारोग॥३१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघा तनसोदिकधान

३७ रवि समदीव ॥५२॥ जा के तन मुख नाम आंषि ॥ पो छ्र मलम
अलिमाषि ॥ इत्यादिक जे आनस राम ॥ तिजग मैं चौं
ी नाम ॥ ५३ ॥ देह रसन नासा ड्रिग कांन ॥ ...
वेंद्री जांन ॥ नरनारकी देव तिरजंच ॥ इनकै ... कै
पंच ॥ ५४ ॥ चौथी प्रकृति शरीर विचारि ॥ औदारिक वै
यक आहार ॥ तैजस कारमान मिलि ... ॥ औदारि
नुष तिरजंच ॥ ५५ ॥ वैक्रिय देवनारक ... ॥ ...
... ल माइ ... ॥ तैजस कारमान न कहे ॥ ...
... ॥ ५५ ॥ जैसी ... ति
... प्रकृति छह कही ॥ ... संघा...
॥ ... माष ही ... ॥ ५६ ॥ ... है का...
॥ ... माषा है बंध ॥ ... संधा ॥
॥ ... प्रकृति ... ॥ ... तन ...
... ॥ ... वैक्रि... ॥ अंग उपंग ...
... ॥ दोहरा ॥ सिर नि... कर ॥ ...
... विधि ॥ और उपंग अने
॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ ... कार... ॥ ...
... होइ ॥ ... ॥ ... संघ
... प्रकार ॥ ... ॥ ...
... स्थान ॥ ... ॥ सा...
... ॥ ... ॥ ... सम होई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसौनरकनिपात॥बरनीआउकरमकीबानिनामक
र्मअबकहौबषानि॥४१॥पिंडप्रकृतिचौदहपरका
र॥अट्ठाईसअपिंडविस्तार॥पिंडभेदपैंसठिपरसत्त॥
मिलितिरानवैहौहिंसमस्त॥४२॥जेतिरानवेकेहैंब
षानि॥पिंडअपिंडबयालिसबानि॥प्रथमपिंडप्र
कृतिगतिनामसुरनरपसुनारकदुषधाम॥४४
॥सोरठा॥सुरगतिसौंसुरगेह॥नरउशरीरनरगतिउ
दै॥पसुगतिसौंपसुदेह॥नरकवसावैनरकगति॥
४५॥चौपाई॥चहुंगतिआनपूरवीचारि॥इनगतिथि
उपरकितिअवधारि॥मरनसमैंतजिदेहसुकोउ॥प
रभवगमनकरैजबजीउ॥४६॥आनिपूरवीप्रकृति
परेरि॥भावागतिमैंआनैघेरि॥आनपूरवीहोरसहा
इ॥गहैजीवनौतनपरजाइ॥४७॥तृतीयप्रकितिइंद्री
अधिकार॥इमेंदुगतिगचउपंचविचार॥फरसरस
ननासाद्रिगकांन॥जथाजोगजियनामबषांन॥॥
४८॥तनइंद्रीधारैजोकोइ॥सुषनासाद्रिगकांननहो
इ॥सोएकेंद्रीथावरकाइ॥भूजलअगनिवनसपतिवा
इ॥४९॥जाकेतनरसनाद्वैथोक॥संषगिंडोवाजल
बजोक॥इत्यादिकजेजंगमजंत॥तेद्वैइंद्रीकहेसि
त॥५०॥जाकेतनमुषनाकहुजूर॥घुनपिपीलिका
कांनषजूर॥इत्यादिकतेइंद्रीजीव॥आंषि [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

४० छतिजौ दहवनिरहा॥ तिनकी पैसठि साषा कही॥ ७॥
अठाईसअपिंडवरनई॥ तेसबमिलितिरानवैभई॥ ८
तेसबमिलितिरानवैभई॥ वरनौं गोतकर्मसातमा॥
जासौं ऊंचनीचआतमा॥ ९॥ ऊच्चगोतउदोतप्रवान॥ पा
वैजीवऊंचकुलथान॥ नीचगोतफलसंगतिपाइ॥ जी
वनीचकुलउपजैआइ॥ १०॥ दोहरा॥ गोतकर्मकी है
प्रकृति॥ तेऊकहीवषानि॥ अंतरायअबपंचविधि॥
तिन्हकी कहौं कहांनि॥ ११॥ चौपाई॥ अंतरायजे
हमवटपार॥ सोहै भेदपंचपरकार॥ अंतरायतनरु
कीहै डार॥ निहचैएकविवहार॥ १२॥ कहौं प्रथमनि
हचैकीवात॥ जासुउदैआतमगुनघात॥ परगुनत्या
गहार रही जहां॥ दानअंतरायहै तहां॥ १३॥ जबलौं आ
तमभोगनहोइ॥ भोगअंतराइहै सोई॥ लाभअंतराइ
सोजानि॥ आतमतत्वलाभकी हांनि॥ १४॥ वारवारन
जगैउपजोग॥ सो है अंतरायउपभोग॥ आठकर्मकौं
करैनउदी॥ बीरजअंतरायकोउदी॥ १५॥ निहचैक
हापंचपरकार॥ अबसुनुअंतरायव्यवहार॥ छती
वस्तु किछुदेइनसकै॥ दानअंतरायबलतकै॥
१६॥ उद्यमकरैनसंपतिहोइ॥ लाभअंतरायहै सोइ
॥ विषैभोगसामग्रीछती॥ जीवभोगकरिनसकैरती
॥ १७॥ रागहोइकैजोगनरंरै॥ भोगअंतरायबलफेरै

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहै॥ यह जिनवचन विनोद ॥९८॥ ताते वालनिगोद की॥ कहै कहांलो कोइ॥ साधारनपरकिति उदै॥ जिय निगोदिया होइ॥९९॥ यह साधारनप्रकृति लों॥ वरनी चौदह साष॥ वाकी चौदह जे रही॥ ते वरनौं मुषभाष॥१००॥ ॥छंद पद्धडी ढाल जयमालकी॥ थिरप्रकृति उदै थिरता अभंग॥ अस्थिर उदोत सों अथिर अंग॥ सुभप्रकृति उदै सुभरीति सर्व॥ जहं असुभ उदै तहं असुभ पर्व॥१॥ सोभाग प्रकृति जाके उदोत॥ सो प्रानी सबकों इष्ट होत॥ दुरभाग प्रकृति के उदै जीव॥ सबकों अनिष्ट लागे सदीव॥२॥ जह सुस्वर प्रकृति उदै वषानि॥ तहं कंठ कोकिला मधुर वानि॥ जे दुस्वरप्रकृति उदोत धार॥ ताकी धुनि जैसें गर्दभ पुकार॥३॥ आदेय प्रकृति जाके उदोत॥ ताको बहु आदर मान होत॥ जब अनादेयकों उदै होइ॥ तब आदर मान न करै कोइ॥४॥ जस नामउदै जिस जीव पांहि॥ ताकी जस कीर्ति जगत मांहि॥ जहं प्रगट भाल में अजस रेष॥ तहं अपजस अपकीरति विशेषि॥५॥ निर्माननि चितेरा उदै आइ॥ सब अंग उपंग रचै वनाइ॥ तित्थंकर नामप्रकृति उदोत॥ लहि जीव तित्थंकर देव होत॥६॥ दोहरा॥ ए तिरानवै औ रदस॥ तनसंबंधी आनि॥ मिले एक सौं तीनि सब॥ होहि नामकी वानि॥७॥ चौपाई॥ नामप्रकृति संपूरन भई॥ पिंड अपिंड कही जो ज्ञई॥ पिंडप्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१ नि॥ [illegible] ॥ चौपई ॥ केवलज्ञानावरनी विना ॥ बाकी चारि
आवरन गिना ॥ केवल दरसन आवरन बोडि ॥ बाकी
ती मैंला जहि जोडि ॥ २८ ॥ चारि भेद संजुलनकषाइ ॥
नवविधि नोकषाइ सदाइ ॥ समय प्रकृति मिथ्यात्व
षानि ॥ अंतराय की पांचौ वानि ॥ २९ ॥ एछ्वीस प्रकृति
सब भई ॥ देसघातिया की वरनई ॥ बाकी रही एकसो ए
क ॥ ते सब कहीं घात अतिरेक ॥ ३० ॥ दोहरा ॥ दुविधि
गोत है वेदनी आउ चारि विधि नांनि मिलि तिरानवै
नामकी ॥ एकोतरसो वांनि ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ जे घातहि
सब आतम दर्व ॥ तेई कहे घातिया सर्व ॥ जे कछु घात
करहिं कछु नांहि ॥ देसघातिया तैं ॥ ते अघातिया क
हा विख्यात ॥ अब सुनु पुन्न पाप के भेद ॥ भिन्न भिन्न स
वक रो निवेद ॥ ३३ ॥ इक साता वेदनी सुभाउ ॥ नरक
आउ ॥ नरक आउ विनु तीनो आउ ॥ ऊंच गोत मानुष
गति भली मानुष आनपूरवी रली ॥ ३४ ॥ सुरगति सु
रानुपूरव जानि ॥ जाति पंचेंद्री एक बषानि ॥ पंच शरी
र पंच संघात बंधन सहित पंच दस गात ॥ ३५ ॥ अंगउ
पंग तीनि विधि मास ॥ विंशति वर्न गंध रस फास ॥ ३६ ॥
भली चाल आतप उद्योत ॥ पर पर घात अगुरुलघु हो
त ॥ सास उसास प्रत्येक प्रवान ॥ त्रस बादर पर्यापति ग्या
न ॥ ३७ ॥ थिर सुभ सुभग सुस्वर आदेय ॥ जस निरमान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकभोगसामग्रीसार॥ताकोभोगजुवारंबार॥१८
कीजैसोकहिएउपभोगताहूकोनजुरैसंजोगय
हुउपभोगघातकीकथा॥वीरजअंतरायसुनुज
था॥१९॥सकतिअनंतजीवकीकही॥सोजगदसा
मांहिंदविरही॥जगमैसकतिकरमआधीन॥कवहूंस
बलकबहूंबलहीन॥२०॥तनइंद्रीबलफुरैनजहां
॥वीरजअंतरायहैतहां॥तातैजगतवसाएखांम॥न
यरायीभाषाभगवांन॥२१॥दोहा॥एवरनीविवहा
रकी॥अंतरायविधिपंच॥अंतरबहिरविचारतैं
॥संसैरहैनरंच॥२२॥स्यादवादजिनकेवचन॥जो
मानैपरवांन॥सोजानैसबैनैदसा॥औरनकौंअ
जांन॥२३॥इतिप्रकृतिविचार॥दोहा॥सर्वघाती
वघातीयाकीप्रकृतिदसघातियावानि॥वाकी
औरअघातीया॥तेसबकहौंवषानि॥२४॥चौपा
ई॥केवलग्यानावरनीवानि॥केवलदरसआवरन
जानि॥निद्रापांचचौकारीतानिप्रकृतिदुआद
सलीजैवानि॥२५॥अनंतानबंधअप्रत्याख्यानप्र
त्याख्यानचौकत्रिकजानि॥सर्वमिथ्यातमिश्रि
तमिथ्यात॥एइकवीसप्रकृतिसबघात॥२६॥
दोहा॥सर्वघातियाकीकही॥विंशतिएकवष
ानि॥अबवरनौंछब्बीसविधि॥देसघातियता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२ वहै त्रै भव धारि ॥ जे पुद्गल विपाक की वानि ॥ ते
बासठि विधि कहैं वषानि ॥ ४८ ॥ पंच शरीर बंधन सं
घात ॥ अंग उपंग अठारह ष्यात ॥ छह संघनन छहै सं
ठान ॥ वर्न्नादिक गुन बीस वषानि ॥ ४९ ॥ थिर उदोत
आतप निरमान ॥ अथिर अगुरुलघु असुभ विधा
न ॥ साधारन प्रत्येक उपघात ॥ सुभ परघात सुबास
उवात ॥ ५० ॥ जीव विपाक अठत्तरि गनी ॥ दुविधि
गोत द्वै विधि वेदनी ॥ सरव घात अरु देस विघात सैं
ताली स प्रकृति विष्यात ॥ ५१ ॥ तिर्थंकर बादर उस्स
ास ॥ सूक्षिम प्रतापता परगास ॥ अपर्यापत सुस्वर
गेय दुस्सर अनादेय आदेय ॥ ५२ ॥ जस अपजस त्र
स थावर वानि ॥ दुर्भग सुभग चालि है जानि ॥ इंद्री
जाति पंच विधि गहा ॥ गति चारौं एतौ सब कही ॥
५३ ॥ दोहरा ॥ जीव विपाकी की कही ॥ प्रकृति अठत्त
रि ठौर ॥ छेत्र विपाकी अब कहौं ॥ भव विपाकि नौ औ
र ॥ ५४ ॥ आनपूरवी चारि विधि ॥ छेत्र विपाकी जा
नि ॥ चारि आउ बल की प्रकृति ॥ भव विपाकि या वी
नि ॥ ५५ ॥ घाति अघाति द्विविधि कहै पुंन पाप है वा
क ॥ बंध उदै दो ज कहे ॥ वरने चारि विपाक ॥ ५६ ॥ अ
ब इन्ह आठौं करम की ॥ थिति जघन्य उतकिष्ट ॥ कहौं
वात संषेप सौं ॥ सुनौ कान दे इष्ट ॥ ५७ ॥ चौपाई ॥ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिथंकरधेय॥पुन्यप्रकृतिकीअठसठिवानि॥पापप्र
कृतिअबकहौंवषाति॥३८॥सर्वघातियाकीइकवी
स॥देसघातियाकीछब्बीस॥एप्रकृतिसैंतालीसहुई॥
वाकीओरकहौंजूजुई॥३९॥दोहरा॥प्रकृतिअसात
नीचकुल॥नरकआउगतिदोइ॥पसुनारकइनदुहूं
नकी॥आनपूरवीजोइ॥४०॥चौपई॥चारिजातिपंचें
द्रीविना॥पंचसंघननप्रथमैंगिना॥समचतुरसविन
पंचप्रकार॥वर्न्नादिकविंशतिपरकार॥४१॥बुरीचा
लियावरउपघात॥सूछिमसाधारनविष्यात॥अना
देयअपजायतिदसा॥दुर्भगदुस्वरअसुभअजसा
॥४२॥अथिरसमेतएकसौआनि॥एसबपापप्रकृ
तिपरवानि॥केतीबंधनदैकेतीकतिन्हकीवातक
हौंअबठीक॥४३॥दोहरा॥चारिबंधवरनादिमैं॥वा
कीसोलहनांहि॥एकबंधमिथ्यातमैं॥द्वैगरभितइ
समांहि॥४४॥तनबंधनसंघातकी॥प्रकृतिपंचदस
जानिपंचबंधरसबंधविनु॥एअठाईसवानि॥४५
अठाईसकोबंधनहिं॥बंधएकसौवास॥इनमैंदो
ईबढाईयै॥हौंहितदैबावीस॥४६॥चौपाई॥बंधत
दैविशेषयहवात॥एकमिथ्याततीनिमिथ्यात॥ए
ईदोइअधिकपरिनई॥प्रकृतिएकसौबाईसभई
॥४७॥अबविपाकवरनौंविधिचारि॥पुदगल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परकार॥ ६७॥ पल्योपमके भेद अनेक॥ तातैं इहां न वर
नाएक॥ जोजन कूप रोमकी बात॥ कही जैनमतमैं वि
ख्यात॥ ६८॥ कूपकथा कछु जैसी कही॥ सो पल्योपम
कहिए सही॥ पल्योपम दस कोडाकोडि॥ सकल ए
कठे कीजहि जोडि॥ ६९॥ एक सागरोपम सो काल॥ प
हूवान जिनमतकी चाल॥ यह सागरोपमकी क
था॥ जथासुनी मैं वरनी तथा॥ ७०॥ दोहरा॥ आठ
करम अठताल सौ॥ प्रकृति भेद विस्तार॥ कै जानै जि
न केवली॥ कै जानै गनधार॥ ७१॥ चौपाई॥ अलपबुद्धि
जैसी मुझ पांहि॥ तैसी मैं वरनी इस मांहि॥ पंडित गुनी
हूसो जन कोइ॥ अलपमती भाषा कवि होइ॥ ७२॥
दोहरा॥ कर्मकांड आगम अगम॥ यथासति मन
आनि॥ भाषा रचना मैं करी॥ बालबोध हित जानि॥
॥७३॥ कलसा गीता छंद॥ यह कर्म प्रकृति विधान अ
विचल॥ नाम ग्रंथ सोहावना॥ इसमांहि गरभित सु
पुत्तचेतन॥ गुपत बारह भावना॥ जो जानि भेद वषा
निसरदहि॥ सबद अरथ विचारसी॥ सो होइ कर्म वि
नासि निरमल सिवसरूप बनारसी॥ ७४॥ दोहा॥
॥ संवत सत्रहसै समय॥ फागुन मास वसंत॥ रितु स
सिवासर सत्तमी॥ तव यह भयो सिद्धंत॥ ७५॥ इति श्री
कर्मप्रकृति विधान संपूर्णः॥ अथ कल्याणमंदिर भ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्यानावरनीकी थितिहास॥ कोडाकोडीसागरतीस॥
यह उतकिष्टदसापरवान॥ एकमुहूरतजघनवषान
॥५८॥ दुतियदरसनावरनीकर्म थितिउतकिष्टकाहीं
सुनुमर्म॥ कोडाकोडीतीससमुद्र एकमुहूरतकीथिति
छुद्र॥५९॥ तीजाकर्मवेदनीजानि॥ कोडाकोडीतीसव
षानि॥ यहउतकिष्टमहाथितिजोइ॥ जघनमुहूरतबा
रहहोइ॥६०॥ चौथामहामोहपरधान॥ थितिउतकिष्ट
कहैभगवान॥ सागरसत्तरिकोडाकोडि॥ लघुथितिए
कमुहूरतजोडि॥६१॥ पंचमआउकहैजगदीस॥ उत
किष्टीसागरतेतीस॥ थितिजघन्यमुहूरतएक॥ यौं
गुरकहीविचारिविवेक॥६२॥ छट्ठानामकर्मथितिक
हौं॥ कोडाकोडिवीससरदहौं॥ सागरयहउतकिष्टवि
थारि॥ आठमुहूरतजघनविचारि॥६३॥ गोतकर्मसा
तवांसरीस॥ उतकिष्टीथितिसागरवीस॥ कोडाकोडि
कालपरवान॥ लघुथितिआठमुहूरतमान॥६४॥ अ
ष्टमअंतरायदुषदानि॥ उतकिष्टीथितिकहौंवषानि
सागरकोडाकोडीतीस॥ लघुथितिएकमुहूरतदीस
॥६५॥ दोहरा॥ वरनीआठौंकरमकी॥ थितिउतकि
ष्टजघन्य॥ याकीमध्यमओरथितितेअसंषअगन्य
॥६६॥ चौपाई॥ अबवरनौंपलोपमकाल॥ तथासाग
रोपमकीचाल॥ ऊवाभरेजेरोमअपार॥ तेवरनेनाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊंईर॥९॥ तुम निरषत जन दीन दयाल॥ संकट तें छू
टै ततकाल॥ ज्यों पसु घेरि लेहिं निसि चोर॥ ते तजि भा
जहिं देषत मोर॥१०॥ तुम भवि जन तारक क्यों होहि॥ ते
चिंत धरि तिरहिं लेते तोहि॥ यह औसें करि जीनु सुभा
उ॥ तिरै मसक ज्यों गरभित वाउ॥११॥ जिनि सब दे
व किपव सिवाम॥ तैं छिन मे जीत्यो सो काम॥ ज्यों ज
ल करै अगिनि उलहानि॥ वाडव अनल पिवै सो
पानि॥१२॥ तुम अनंत गरूवा गुन लिएं॥ क्यों करि भ
गत धरहिं निज हिए॥ कैं लघुरूप तिरहिं संसार॥ य
ह प्रभु महिमा अकथ अपार॥१३॥ क्रोध निवारि कि
यो मन शांति॥ कर्म सुभट जीते केहि भांति॥ यह प
टंतर देषहु संसार॥ नील विरष ज्यों दहै तुसार॥१४॥
मुनिजन हिए कमल निज टोहि॥ सिद्धरूप सम ध्या
वहिं तोहि॥ कमल कर्णिका विनु नहीं और॥ कमल बी
ज उपजन की ठौर॥१५॥ जव तुव ध्यान धरै मुनि कोइ
॥ तव विदेह परमातम होइ॥ जैसे धातु सिला तन त्या
गि॥ कनक सरूप धवैं जब आगि॥१६॥ जाके मन तु
म करहु निवास॥ विनसि जाइ क्यों विग्रह तासु॥ ज्यों
महंत विच आवै कोइ॥ विग्रह मू[illegible]लि वारै सोइ॥१७॥
करहिं विवुध जे आतम ध्यान॥ तु[illegible] भावत है होइ
निदान॥ जैसें नीर सुधा अनुमानि॥ पीवत विष वि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षालिष्यते॥ दोहा॥ परमजोतिपरमातमा॥ परमग्या
नमग्यानपरवीन॥ वंदौंपरमानंदमय॥ घटघट
अंतरलीन॥१॥ चौपई॥ निरभयकरनपरमपरधा
न॥ भवसमुद्रजलतारनजानि॥ सिवमंदिरअघ
हरनअनिंद॥ वंदौंपासचरनअरविंद॥२॥ कमठमा
नभंजनवरवीर॥ गरिमासागरगुनगंभीर॥ सुरगुरपा
रलहैंनहिंजासु॥ मैंअजानजंपौंजसतासु॥३॥ प्रभु
सरूपअतिअगमअथाह॥ क्यौंहमसेतीहोइनि
वाह॥ ज्यौंदिनअंधउलूकोपोत॥ कहिनसकैरवि
किरनउदोत॥४॥ मोहहीनजानैमनमांहि॥ तौवनतु
वगुनवरनेजांहि॥ प्रलैपयोधिकरैजलवौन॥ प्रगट
हिंरतनगिनैतिहिकौन॥५॥ तुमअसंख्यनिर्मलगुन
षानि॥ मैमतिहीनकहौंनिजवानि॥ ज्यौंवालक
निजबांहपसारि॥ सागरपरमितकहैविचारि॥६॥
जेजोगेंदकरहिंतपषेद॥ तेउनजानहिंतुमगुनभे
द॥ भगतिभावमुझमनअभिलाष॥ ज्यौंपंषीवोलै
निजभाष॥७॥ तुवजसमहिमाअगमअपार॥ ना
मएकत्रिभुवनआधार॥ आवैपवनपदुमसरहो
इ॥ ग्रीषमतपतिनिवारैसोइ॥८॥ तुमआवतभवि
जनमनमांहि॥ करमनिबंधसिथिलहोइजां
हि॥ ज्यौंचंदनतरुबोलैमोर॥ डरहिंभुजंगलगेच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रिदकरिनमितमाल॥तिन्हसीसमुकुटतजिदेवमाल
॥तुमचरनलगतलहलहे प्रीति॥नहिंरमहिंऔरज
नसुमनरीति॥२९॥प्रभुभोगविमुषतनकरमझाहि
॥जनपारकरतभवजलनिवाहि॥ज्यौंमाटीकलस
सुपक्वहोइ॥लेभारअधोमुषतिरैतोइ॥३०॥तुममह
राजनिरधननिरासतजिविभौविभौसवजगविकास
॥अछरसुभवसुलिषैनकोइ॥महिमाअनंतभगवं
तसोइ॥३१॥कोपियोकमठनिजवैरदेषि॥तिनिकरी
धूलिवरषाविशेषि॥प्रभुतुमछायानहिभईहीन॥
सोभयोपापलंपटमलीन॥३२॥गरजंतघोरघनअं
धकार॥चमकंतिविज्जुजलमुसलधार॥वरषंतक
मठधरिध्यानरुद्र॥दुस्तरकरंतनिजभवसमुद्र
॥३३॥वस्तुछंद॥मेघमाली२आपुवलफोरि॥भेजे
उदितपिशाचगननाथपासउपसर्गकारन॥अ
गिनिझालझूकंतमुष॥धुनिकरंतजिममत्तवार
न॥कालरूपविकारलतन॥रुंडमालतिन्हकंठि
॥वैनिसंकयहरंकतिज॥कौरेकरमदृढगांठि॥३४॥
चौपाई॥जेतुमचरनकमलतिहुकाल॥सेवहिंत
जिमायाजंजाल॥भावभगतिमनहरषअपार॥ध
नजगतिन्हअवतार॥३५॥भवसागरमहिफिरतअ
५०

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कारकीहानि ॥१८॥ उत्तमभगवंतविमलगुनलीन ॥ स
मलरूपमानिहिंमतिहीनी ॥ ज्यौंनीलियारोगड्रिगग
है ॥ वरनविवरनशंषसौंकहै ॥१९॥ दोहा ॥ निकटरह
तउपदेससुनि ॥ तरुवरभयोअसोक ॥ ज्यौंरविऊगत
जीवसब ॥ प्रगटहोतभुवलोक ॥२०॥ सुमनवृष्टिजेसु
रकरहिं ॥ हेटबींटमुषसौंहि ॥ त्यौंउत्तमसेवतसुमन
जन ॥ बंधअधोमुषहोंहि ॥२१॥ उपजीउत्तमहियउदधि
ते ॥ वानीसुधासमान ॥ जेहिपावतभविजनलहैं ॥ अज
रअमरपदथान ॥२२॥ करहिंइसारतिलोककौं ॥ एसु
रचामरदोइ ॥ भावसहितजेजिननमैं तिसुगतिउरध
होइ ॥२३॥ सिंहासनगिरिमेरुसम प्रभुधुनिगरजि
तघोर ॥ स्यामसुतनघनरूपलषि ॥ नाचतभविजनमो
र ॥२४॥ छविहतहोंहिअसोकदल ॥ उत्तमभामंडलदे
षि ॥ वीतरागकेनिकटरहिंरहैनरागविशेष ॥२५॥ सी
षकहैतिहुंलोककौं ॥ यहसुरदुंदुभिनाद ॥ सिवप
थसारथवाहजिन ॥ भजउतजउपरमाद ॥२६॥ तीनि
छत्रत्रिभुवनउदित ॥ मुकुतागनछवि देत ॥ त्रिवि
धिरूपधरिमनहुससिसेवतनषतसमेत ॥२७॥ पद्ध
डीछंद ॥ जयमालकीढाल ॥ प्रभुउत्तमशरीरदुतिराजन
जेम ॥ परतापपुंजजिमसुद्धहेम ॥ अतिधवलसुजस
मान ॥ तिन्हकेगढतीनिविराजमान ॥२८॥ सेवहिंसु

© Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६ स्याम हरित सित लोहित पीत॥ वरन विवरन मनोहर
रमीत॥ ए निरषेत जिराग विरोध॥ सो मुनि करै करम
मल सोध॥१७॥ ऊसबद सुसबद समर ससार॥ श्रवन
सुनत न हिहरष विषाद॥ थुति निंदा रोऊ सम सुनै॥
सो मुनिराज परम पद मुनै॥१८॥ सामायक साधे स
मकाल॥ मुकति पंथ की करै संभाल॥ शत्रु मित्र दोऊ
सम गानै॥ सो रिषिराज करम रिपु हनै॥१९॥ अरिहंत
सिद्ध सूरि उवझाइ॥ साधपंच पद परम सहाइ॥ इनके
चरनन मैं मन लाइ॥ तिस मुनिवर के वंदौ पाइ॥२०
॥पावन पंच परम पद इष्ट॥ जगत मांहि जानै उतकि
ष्ट॥ ठानै गुन थुति वारंवार॥ सो मुनिराज नमौ निर
धार॥२१॥ ग्यान क्रिया गुन धारै चित्त॥ दोष विलोकि प
रै प्राछित्त॥ नित प्रतिक्रमन क्रिया रसलीन॥ सो सुसा
धु संजम परवीन॥२२॥ श्री जिन वचन रचन विस्तार
॥ द्वादशांग परमागम सार॥ निज मति मान करै स्वि
ध्याउ॥ सो मुनिवर वंदौ धरि भाउ॥२३॥ काउसगा सु
द्राधरि नित्त॥ सुद्ध सरूप विचारै चित्त॥ त्यागै त्रिवि
धि जोग ममकार॥ सो मुनिराज लहै भवपार॥२४॥
प्रासुक सिला त्रचित भूषेत॥ अचलै अंग सम भाउ
...त पछिमैं न अलप बिडाल॥ सो जोगी सुरवं
॥२५॥ धरम ध्यान जुत परम विचित्र॥ अंत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार॥७॥दुविधिपरिग्रहदसविधिजानि॥संघअ
घअनंतवषानि॥सकलसंगतजिहोइनिरास॥सोमु
निलहैमोषपरवास॥८॥अधोदिष्टिमारगअनुसरै
॥प्रासुकभूमिनिरषपगधरै॥सदयहिदयसाधैशिव
पंथ॥सोतपसीनिरभैनिरगंथ॥९॥निरभिमाननि
रवद्यअरीन॥कोमलमधुरदोषदुषहीन॥ऐसेसुव
चनकहैसुभाव॥सोमुनिवरवंदौवरिभाव॥१०॥उ
त्तिमकुलश्रावकआचार॥तासुगेहप्रासुकआहा
र॥भुंजैदोषछियालीसटालि॥सोमुनिवंदौसुरति
संभालि॥११॥उचितवस्तुनिजहितपरहेत॥नथाध
रमउपगरनअचेत॥निरखिजतनसौंगहैजुकोइ॥
सोमुनिनमौंजोरिकरदोइ॥१२॥रोगविकृतपूरवआ
हार॥नवदुआरमल[illegible]न॥डारैप्रासुकभू
मिनिहारि॥सोमुनिनमौंभगतिउरधारि॥१३॥को
मलकरकसहरुवसभार॥रूढसचीकननतपतउ
सार॥इनकौंफरसि[illegible]सोमुनिराजति
नेसुरकहै॥१४॥आमलकडुककसायलमिष्ट॥वि
कतछीररसइष्टअनि[illegible]॥[illegible]हैसमानिरतिअरति
नवेव॥सोमुनिराजनमहितसंदेव॥१५॥सुभसुगंध
नानापरकार॥दुसदा[illegible]दुरगंधकुपार॥ना[illegible]
पैगिनैसमतल॥सोमुनिजिनसासन[illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लहलहैलहै॥नहिरहैमयला॥इसदामरमनजान
ई सोदु परबपला॥१॥जिसदा गिरदापेचसों॥हिरद
कलमला॥जिसनोसंसेतिमिरसोंसुझेकलमला
॥षमैजिन्हादा सुम्रिनो॥ऊग्यानऊदम्रासहजति
न्हांदावहुजसों॥चितरहैदुदला॥२॥जिन्हाइककर
मदादुविघ्नपदमली॥इकअनिठअसोइना इक
गाकममला॥तिन्हाइकनसुझईउपदेसअहला
॥वंककराछेलोयना॥ज्यउंचंदगहला॥४॥जिन्हां
चित इतबारसो॥गुरुवचननमला॥तिन्हांअगोक
थनयोंज्यो कोरे रला॥वरसे पाहनभूम्रिमेनहिहो
इचहला॥वोएबीजनउप्पजेजलजाइवहला॥५॥
चेतनइससमारमें॥हंसदाइकला॥आपेरूपवि
शाचके॥तैंआपाछला॥आपेघुम्पागिरिपया॥कि
नि दिताटला॥जिन्हसौंमिलनवियोगहै तिन्हसोंचा
तला॥६॥इसदुनियांदीमोजसौंतंगरवगहला॥भया
भारषमपुरुषजौं छप्परविचवला॥सुपनेंदासुष
मानितैंअपनाघरघला फिरयाभरमकेभौरमें॥तैं
सहज विलला॥७॥जोगअइंबरतेंकियाकरिअब
[illegible]मला॥अंगविभूतिलगाइकै॥लीआमगछला॥कै
[illegible]मातैं ज्याघरबारमहला॥अप्पापने[illegible]ति
[illegible]सबरूगगला॥८॥दायामिथ्याअरु[illegible]पेच

रवाहिरसहजपवित्र॥न्हाभविलेपनतजेत्रिकालधं
रैसोमुनिदीनदयाल॥२६॥लोकलाजविगलितभय
हीन॥विषयवासनारहितअदीन॥नगनदिगंबरमु
द्राधार॥सोमुनिराजजगतसुषकार॥२७॥मघनकेस
गरभितमलकीच॥तमअसंषत्रुतपतितसवीच॥क
चलुंचैयहकारनजानि॥सोमुनिनमोजोरिजुगपा
नि॥२८॥छुधावेदनीउपसमहेत॥रसअनरससम
भावसमेत॥एकवारलघुभोजनकरै॥सोमुनिमुकति
पंथपगधरै॥२९॥देइसहारीसाधनमोष॥नवलौंउ
चितकायवलपोष॥यहविचारिथितलेइअहार॥
सोमुनिपरमधरमधनधार॥३०॥जहंतहंनवदुवार
मलपात॥तहंतहंअमितजीवउतपात॥यहलषित
जैसंतवनकाज॥सोसिवपथसाधकरिषिराज॥३१
॥दोहरा॥एअठाइसमूलगुनजोपालैनिरदोष॥सो
मुनिकहतवनारसी॥पावैअविचलमोष॥३२॥
इतिश्रीसाधुवंदनासंपूर्णः॥अथमोक्षमारगपेडी
लिष्यते॥इकसमैरुचिवंतनौ॥गुरुअषैसुनमल्ल
॥जोतुझअंदरचेतना॥वहैतुसाडीअल्ल॥१॥पैडी॥
एजिनवचनसुहावने॥सुनुचतुरछयल्ला॥अषै
रोचकशिष्यनो॥गुरुदीनदयल्ला॥इसबुझे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजेभविजनभासमहिं॥तेनिजपुंनभंडारसंचिचिरपंपं
पनासहिं॥रोमराजिउल्लसितअंगप्रभुगुनमनध्या
वहिं॥सुरगसंपदाभुंजिवेगिपंचमगतिपावहिं॥यहि
कल्यानमंदिरकियउ॥कुमुदचंदकीबुद्धि॥भाषा
कहतबनारसी॥कारनसम्मकितसुद्धि॥४४॥इ
ति श्रीकल्याणमंदिरभाषासमाप्तः॥अथसाधुवंद
नालिष्यते॥दोहरा॥श्रीजिनभाषितभारती॥सुमिरि
आनिमुषपाठ॥कहौंमूलगुनसाधके॥परविसिवि
शतिआठ॥१॥पंचमहाब्रतआदरन॥सुमितिपंचप
रकार॥प्रबलपंचइंद्रीविजय॥षटआविसिकआचा
र॥२॥भूमिसैनमंजनतजन॥वसनत्यागकचलोच
॥एकवारलघुअसनथिति॥असनदंतवनमोच॥
॥३॥चौपाई॥थावरजंतुपंचपरकार॥चारिभेदजं
गमतनधार॥जोसबजीवनिकोरषपाल॥सोरुसा
धुवंदौतिरकाल॥४॥संततसत्यवचनमुषकहै॥अ
थवामौनवरतधरिरहै॥मृषावादनहिबोलैरती
॥सोजिनमारगसाचाजती॥५॥कौडीआदिरतनप
रजंत॥घटितअघटधनभेदअनंत॥दत्तअदत्त
नफरसैजोइ॥तारनतरनमुनीसरसोइ॥६॥पसुपं
छीनरदानवदेव॥इत्यादिकरमनीरतिसेव॥तजे
निरंतरमदनविकार॥सोमुनिनमोजगतहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narja, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्यान ॥ मैं तुम सुजस सुन्यो न हि कान ॥ जो प्रभु नाम मं
त्र मन धरै ॥ तासौं विपत्ति भुयंगिनि डरै ॥ ३६ ॥ मन वंछि
त फल जिनपद मांहि ॥ मैं पूरब भव पूजे नांहि ॥ माया म
गन फिरयौ अग्यान करैं रंक जन मुझ अपमान ॥
३७ ॥ मोह तिमिर छायौ दृग मोहि ॥ जनमंतर देष्यौ न
हि तोहि ॥ तो दुर्जन मुझ संगति गहै ॥ मरम छेदि के
कुवचन कहै ॥ ३८ ॥ सुन्यो कान जस पूजे पाइ ॥ नै
ननि देष्यौ रूप अघाइ ॥ भगति हेतु न भयो चित चा
उ ॥ दुषदायक किरिया बिनु भाउ ॥ ३९ ॥ महाराज स
रनागत पाल ॥ पतित उधारन दीन दयाल ॥ सुमि
रन करौं नाइ निज सीस ॥ मुझ दुष दूरि करहु जग
दीस ॥ ४० ॥ करम निकंदन महिमा सार ॥ असर
न सरन सुजस विस्तार ॥ नहिं सेवो तुम से प्रभु पा
इ ॥ तो मुझ जनम अकारथ जाय ॥ ४१ ॥ सुरगुन वं
दित दया निधान ॥ जगतारन जगपति जगजान ॥
॥ दुष सागर तैं मोहि निकासि ॥ निरभै थान देहु सु
षरासि ॥ ४२ ॥ मैं तुम चरन कमल गुन गाइ ॥ बहु
विधि भगति करी मन लाइ ॥ जनम जनम प्रभु पावौं
प्रभु तोहि ॥ यह सेवा फल दीजे मोहि ॥ ४३ ॥ ढाल
किं कलपत्तरू की ॥ [illegible] हि विधि श्री भगवंत सुज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[illegible]तैरीधरहै ॥९९॥ कवित्त ॥ आलसत्यागुजागु
नरचेतन ॥ बलसंभारमतिकरहिविलंब ॥ इहां
नसुषलवलेसजगतमइ ॥ निंबविरषमहलगइ
नअंब ॥ तातइतंअंतरविपक्षहरु ॥ करुविलं
[illegible]जअक्षकरंब ॥ गहुगुनग्यानवइहुचारितथा
॥ रहिमोषिमगसनमुषबंब ॥१००॥ इतिग्रंथसमा
प्तः ॥ अथभोगलिष्यंते ॥ कवित्त ॥ जैनवंससरहंस
दिगंबरमुनिपतिअजितदेवअतिआरिजताकेप
दवादिमदभंजन ॥ प्रगटेविजयसिंहआचारज
॥ ताकेपदभएसोमप्रभतिन्हग्रंथकीयोहित
कारज ॥ जाकेपढतसुनतअवधारत ॥ हौंहिसु
सषजेपुरुषअनारज ॥१०१॥ दोहरा ॥ नामसूक्ति
मुक्तावली ॥ द्वाविंसतिअधिकार ॥ सतसिलो
कपरवानसव ॥ इतिग्रंथविस्तार ॥१०२॥ कौंर
पालबानारसीमित्रजुगलइकचित्त ॥ तिन्हग
रंथभाषाकीयौ ॥ बहुविधिछंदकवित्त ॥१०३॥ सो
मवारएकादशी ॥ करनक्षत्रसितपाष ॥१०॥ इति
श्रीसूक्तिमुक्तावलीभाषासमाप्तः ॥ अथबावनीलि
ष्यते ॥ ॐकारसबदविहदयाकेउभयरूपएं ॥ एकत्रालीक नावएका ॥
पुद्गलको ॥ सुद्धताविभावलिपेउओरापचिद
नंदरूपसद्विभाउएप्रभावजडिबलको ॥

[illegible]लहसेर कातें [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वपार॥९५॥दोहरा॥गुनअरुधर्मसुथिररहइ॥ज
सप्रतापगंभीर॥कुसलहकुजिमलहलहलहइते
हिमारगचलुवार॥९६॥कवित्त॥वंदनविनयसु
कुटसिरऊप्पर॥सुगुरुवचनकुंडलजुगकान॥
अंतरसत्रुविजयभुजमंडन॥मुकुतमालउरगु
नअमलान॥त्यागसहजकरकटकविराजत॥सो
भितसत्पसवर्स्रुषपानभूषनतजहितकृतनमं
डित॥पातइसंतपुरुषपरधान॥९७॥सवईया॥
गहइजेसुजनरीतिगुनीसौंनिवाहइप्रीति॥सेवा
साधइगुरकीविनइसौंकरजोरिकै॥विद्याकौवि
सनधरै॥परतियसंगहरइ॥दुर्जनकासंगतसौंब
इठइसुषमोरकइ॥तजइलोकनिंद्यकाज॥पूजइ
देवजिनराज॥करइजेकरनथिरउमंगबहोरिकै
इ॥तेईजावसुषाहौंहिं॥तेईमोषमुषाहौंहिं॥तेईं
हिंपरमकरमफंदतोरिकइ॥९८॥सवईया॥परु
निंदात्यागुकरु॥मनमइविरागुधरु॥क्रोधमानमा
यालोभचारोपरिहरिरे॥हिरदइमइतोषगहुसम
तासौंसारोरहु॥धरमकोभेदलहु॥षेदमइनपरु
रे॥करमकौवंसषोउ॥मुकतिकौपंथजोउ॥सुष
तकोबीजबोउ॥दुरितसौंडरुरे॥अंनरअउसौरि
हि॥वारवारकहौंतेहि॥नाइतौमिथ्यामतमैं॥नि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुनलोप॥ एसवलकूनजानिमुनि॥ तजहितत्तक्रन
कोप॥ छप्पय॥ कोपधर्मधनदहै॥ अगिनिजिमवि
रषविनासइ॥ कोपसुजसआवरइ॥ राहुजिमचंद्रग
रासइ॥ कोपनीतिदलैइ॥ नागजिमलताविहंडइ॥ मत्त ४
कोपकाजसवहरइ॥ पवनजिमजलधरषंडइ॥ संच
रतकोपदुषउप्पजइ॥ वढइत्रिषाजिमधूपमहं॥ क
रुनाविलोपगुनगोपजुतं॥ कोपनिषिद्धमहंतकहं
॥४८॥ मानकौअधिकार॥ कवित्त॥ जातेनिकसिवि
पतिसरितासव॥ जगमेंफैलिरहीचहुंतेर॥ जाकेढिग
गुनग्रामनामनहिं॥ मायाकुमतिगुफाअतिघोर॥
जहंवधवुद्धिधूमरेषासम॥ उदितकोपदावानलजो
र॥ सोअभिमानपहारपटंतर॥ तजततुरतहिंसरवग्यकि
सोर॥ ४९॥ रोडकछंद॥ मंजैउपसमथंभ॥ सुमतिजंजी
रविहंडै॥ कुवचनरजसंग्रहै॥ विनैवनपंकतिषंडै॥
जगमेंफिरइसुछंद॥ वैरअंकुसनहिंमानै॥ गजजें
नरमदअंध॥ सहजसवअनरथठानै॥ ५०॥ करषा
छंद॥ मानसवत्तविनआचारभंजनकरै॥ पवनसंचा
रजिमघनविहंडइ॥ मानआदरतननयविनयलोप
इसकल॥ भुजगविषभीरजिमसरनमंडइ॥ मानके
उदितजगमांहिविनसैसुजस॥ जुपितमातंगजि
मकुमुदषंडइ॥ मानकीरीतिविपरीतिकरततिजि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निकौत्यागजोग॥आतमगवेषीलोगपाकीभांति
जानी है॥४३॥छप्पय॥ज्यौंनदि अगिनिअघाइ॥पा
इईधनअनेकविधि॥ज्यौंसरितघननीरतृपितन
हिहोइनीरनिधि॥त्यौंअसंषधनवढतमूढसंतोष
नमानइ॥पापकरतनहिडरइ॥बंधकारनमनआ
नइ॥परतषविलोकिजन्मनमरन॥अथिररूपसं
सारक्रम॥समुझइनआपपरतापगुन॥भ्रगटवना
रसिमोहभ्रम॥४४॥क्रोधकौअधिकार॥गीताछंद॥
जोसुजनचित्तविकारकारन॥मनहुमदिरापान॥
जोभ्रमभयचिंतावढावन॥असितसरपसमान॥
जोजंतुजीवनहरनविषसम॥जगदहनदववान॥
सोकोपरासिविनासिभविजन॥लहतशिवसुषथ
ान॥४५॥कवित्त॥जवमुनिकोइवोइतपतरुवर॥
उपसमजलसींचतचितषेत॥उदितग्यानसाषा
गुनपल्लव॥मंगलपुहुपमुकतिफलहेत॥तवत
हंकोपदवानलउपजत॥महामोहदलपवनसमे
त॥सोभसमंतकरतछिनअंतर॥दाहतविरषस
हितमुनिचेत॥४६॥वस्तुछंद॥२३॥कलहमंडन॥
करनउदवेग॥जसषंडनहितहरन॥दुषविलापसं
तापसाधन॥दुरवैनसमधानधरमपुंनमारगवि
राधन॥विनयरमनदुर्गतिगमन॥कुमतिरमन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

२९ जुगलधर्मयथा ॥ चौपई ॥ प्रथमहि जुगुलधर्म है जै
सा ॥ गुरपरसाद कहौं किछु तैसा ॥ जनमहि जुगुलु
नारि नर दोऊ ॥ भाई बहिन न मानै कोऊ ॥ २७ ॥ दोहरा ॥
होंहि एक से जुगल सब ॥ कौतूहली विचित्र ॥ सुर
से सुंदर सोमसे ॥ बहु रागी बहु मित्र ॥ २८ ॥ सवैया ॥ इ
कतीसा ॥ सबही के चित्त सब सरल सुभाई नित्त सब
ही के थिर चित्त कोऊ न सुगुलिया ॥ हिए पुन्न सम पोष
लिए सह जसंतोष गुननि के कोष दुष दोष के उगुलि
या ॥ कोउ न हि लैरे कोऊ काहू कोऊ कबहूं न करै का
हू की चुगुलिया ॥ समता सहित संकलेसता रहित
सब सुषिया सदा बसै से जीव है जुगुलिया ॥ २९ ॥ भू
षन वीन वस्त्र मलहीन सबही के घर घर निकट
क[illegible] तरु वाटिका ॥ नाही वैर भाउ नाही वध बंध
कौं वदाउ नाही रोग ताउ न विलोकै कोऊ नाटिका
॥ विविध परिग्रह सबके घर देषियै पै काहू के न पै
रि पम हार न कपाटिका ॥ अलप अहारी सब मृदु उत
न धारी ॥ सब सुंदर अकारी सब ऐसी परपाटिका ॥
३० ॥ दोहरा ॥ घर घर नाटक होहिं नित ॥ घर घर गी
त संगीत ॥ कबहूं कोउ न देषियै ॥ बरनी पीत भयभी
त ॥ ३१ ॥ सवैया इकतीसा ॥ जिन्ह के अलप[illegible] कलप
विकल[illegible] रोग थोरी भूष जल[illegible] अहलेवत ॥ जिन्ह के

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दहरनी॥ चारितकरनत्रिधाइसे निधरा है दुविध
एक दोषमुषी एकमोषमुषीवरनी॥१०॥ चौपई
॥ उपसमषियथाष्यातचारित॥ परकृतअनुमोदन
कृतकारित॥ दुविधित्रिविधिपंचविधिअचारा॥
तेरहविधिसतरहपरकारा॥११॥ दोहरा॥ पुरनन
संखअसंखविधि॥ तिन्हकेभेदअनंत॥ सदाचार
गुनकथनयह॥ त्रितीयवेदविरतंत॥१२॥ अथ
चतुर्थवेदयथा॥ सवईया॥ इकतीसा॥ जीवपु
दगलधर्मअधर्मअकासकालएईछहोदरवजग
तकेधरनहार॥ एकएकदरवअनंतगुनअनंत
परजाइकेकरनहार॥ एकएकदरवमेअनंतस
कतिवसेकोउनजनमधरैकोउनमरनहार॥ नि
हचैनिवेदकर्मभेदचौथेवेदमाहिवषानैसुगुरुभ
नैसुगुरुमोहिकोहरनहार॥१३॥ वेसरिछंद॥ चौपा
ई॥ एईचारिवेदजगमांहीसवगरंथइनकीपरछां
ही॥ ज्योंज्योंधर्मभयोविछेद॥ त्योंत्योंगुपुतभए एवेद॥
४॥ दोहरा॥ द्वादसांगवानीविमल॥ गर्भितचारोवेद॥
॥ तेकिनिकीनेकवुभए॥ सोसतवरनोभेद॥१५ जै
गुलधर्मरचनाकहौं॥ ऊलोकररीतिवषाव रिषभ
देवकुलाकथासुनकुमभविकधरिकान॥१६॥ अथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ तीनि ग्यान संजुगुत सव ॥ मति स्रुति औधि रसाल ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ तेरहु मनु के नांउ न जाने नाभिराय चौदहे व षाने ॥ मरुदेवा ताकी वरनारी सीलवंत सुंदरि सुकुमारी ॥ २८ ॥ ताके गर्भ भए अवतारा ॥ रिषभदेव जिन समकित धारी ॥ तीनि ग्यान संजुगुत सुहाए ॥ अगनित नाम जगत मै गाए ॥ २९ ॥ ऋषभदेव वर्नन ॥ दोहरा ॥ ऋषभदेव जे जे दसा धरी किए जे काम ॥ ते ते पद गर्भित भए ॥ प्रगट जगत मै नाम ॥ ३० ॥ जे व्रह्मा के नाम सव ॥ जगत मांहि विष्यात ॥ ते गुन सौं करतूति सौं ॥ रिषभदेव की वात ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ जनमत नाउ भयो सुभ वेला ॥ आदिपुरुष अवतार अकेला ॥ मात पिता नांउ जव राषा रिषभकुमार जगत सब भाषा ॥ ३२ ॥ नाभि नाम राजा के जाए ॥ नाभिकमल उतपन्न कहाए ॥ इंद्र नरिंद करहिं जव सेवा ॥ तव कहिए देवनि के देवा ॥ ३३ ॥ जुगुल रीति जिनि तिउ धरता ॥ ता ते कहै सिष्टि के करता ॥ असि मसि कृषि वानिज के दाता ॥ ता कारन विधि नांउ विधाता ॥ ३४ ॥ क्रियाविशेष रची जग जैनी ॥ जगत विरंचि कहै प्रभु सेनी ॥ जुग की आदि प्रजा जव पाले ॥ तव जगनाउ प्रजापति आले ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ कियो तपका हंसमे ॥ न टाअ पछराबांम ॥ जगत कहै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलपसंकलप विकलप होत थोरो सुमन जलप अ
लप अमेवता ॥ जिन्हके न कोउ अरिदार धसरीरब
रित्रिपतिकी दसा धरैं विपतिन वेवता ॥ जिन्हके वि
षे वढाउ परलोपम निआउ सबै नरराउ कोउ काहू
कौंन सेवता ॥ ऐसे भद्र मानुष जुगल अवतार पाइ
करि कैरि भोग मरि होहि देवता ॥२१॥ जिन्हके ज
नम मांहि माता पिता मरि जांहि व्यापै न वियोग दुष
सोग नाहि धरना ॥ अपने अगूठा कों अमृत रस पा
न करि जिन्ह कौं अपनो तन वर्धमान करना ॥ अंत
काल जिन्ह कौं असाता वेदनी न होइ छींक आएं
अथवा जंभाई आएं मरना ॥ जिन्ह को सरीर षिरि
जाइ ज्यों उडै कपूर ऐसा जिनवानी मे जुगल धर्म व
रना ॥२२॥ कुलकरवर्न्ननं ॥ चौपाई ॥ जुगल धर्म ज
वले इमे रारा ॥ वाकी काल रहै किछु थोरा ॥ प्रगटहिं
तहां चतुर्दस ग्यानी ॥ कुलकर नांउ कहावहिं ग्यानी
॥२४॥ सवसु जांन सव की गति नीका ॥ सव संसै मेट
हिं सव जीका ॥ होंहि उछिन्न कलपतरु ज्यों ज्यों ॥ कु
लकर आगम भाषहि त्यों त्यों ॥२५॥ दोहरा ॥ कहौ
सव निमरि मरिजन महरि हरि भांति कहाउ ॥ धरि
धरि तन मरि मरि गए ॥ करि करि परन आउ ॥२६॥
एहि विधि चौदह मनु भए ॥ किछु किछु अंतर का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥२१॥ग्यांन दिवाकर तगिया मति किरन प्रवक
कै सत षंड विहंडिया सुमति मिरपड़ह्ला॥ सत्पद्र
तापें भंजिया दुरगत्ति दहल्ला॥ अग्नि अंगारे ह कि
या॥ज्यउं तूल पहल्ला॥२२॥दोहरा॥ यह सदगुरु
देसना॥ करि आश्रव दी वाडि॥ लही पैडी मोष
दी॥ करमक पाटउ घाडि॥२३॥भवथिति जिन्ह
की घटि गई॥ तिन्ह कौ यहु उपदेश॥ कहत बना
रसिदास यौं॥ मूढ न समुझै लेस॥२४॥इति मो
क्षमार्ग पैडी समाप्त॥ अथ कर्म छत्तीसी लिष
ते॥दोहरा॥ परम निरंजन परम गुरु॥ परम पुरु
परधान॥ वंदौ परम समाधिमय॥ भय भंजन भ
गवान॥१॥ जिनवानी परवान करि॥ सुगुरु सी
ष मन आनि॥ कछु क जीव अरु करम कौं॥ नि
रनै कहौं वषानि॥२॥ अगम अनंत अलोक न
भ॥ तामै लोक अकास॥ सदा काल ताके उदर॥
जीव अजीव निवास॥३॥ जीव दरव की द्वै दसा॥
संसारी अरु सिद्ध॥ पंच विकल्प अजीव के॥ अ
षै अनादि अकिद्ध॥४॥ गगन काल पुद्गल ध
रम अरु अधर्म अभिधान॥ अब कि कु पुद
दरब कौ॥ कहौं विशेष वषान॥५॥ चरम ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गट है॥ पुद्गलदरब अनंत॥ जडलछन निरजी
वदल॥ रूपीमूरतिवंत॥ ६॥ जो त्रिभुवनथितिदेषि
ये॥ थिरजंगमआकार॥ सो पुद्गलपरवानकौं है
अनादिविस्तार॥ ७॥ अब पुद्गलके बीसगुन॥ क
है॥ प्रगटसमुझाइ॥ गरभित औरअनंतगुन॥ अन
नंतपरजाय॥ ८॥ श्यामपीतउज्जलअरुन॥ हरित
मीष्ट बहुभांति॥ विविधिवरन जो देषिये॥ सो पु
द्गलकी कांति॥ ९॥ आमलतिक तकषायकडु
षार॥ मधुररसभोग॥ ए पुद्गलके पांचगुन॥ घ
ट मांनैसबलोग॥ १०॥ तातौ शीरौ चीकनौ॥ रूषौन
रम कठोर॥ हरुवो अरु भारीसहज॥ आठफरसगु
नजोर॥ ११॥ जो सुगंध दुरगंध गुन॥ सो पुद्गलको
रूप॥ अब पुद्गलपरजाइकी॥ महिमा कहौं अनू
प॥ १२॥ सबद बंध सूक्षम सरल॥ लंबव डालघु
थूल॥ विछुरनि भिद निउदोत तम॥ इनको पुद्ग
लमूल॥ १३॥ छाया आकृति तेज द्युति॥ इत्यादिक
बहुभेद॥ ए पुद्गलपरजाइ सब॥ प्रगट होहि हिं
भेद॥ १४॥ केई सुभ केई असुभ॥ केई चिर भयानक
... सहज सुभाउ गति॥ अरु सामानविशेष
... पुद्गल पिंड हैं॥ ... मूरति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ बलवासदेवप्रतिवासदेवविद्याहरचारणमु
णिंदइंदछेदाबुद्धिमत्रकी ॥ अठाईसौंलवधिके
विवधसंधेयासाधुसिद्धगतिभएकीनीसुगम
अगमकी ॥ बानारसीदासऐसौअभीऊंडपिंडपा
यौतह्नौलौंपहुचिकालक्रमकीनजमकी ॥ ८ ॥ ई
तरनिगोदमेंविभावताकेबहुरूपनौकौएकअंस
आवेहै ॥ वहैअंसतेजपुंजदारथआगनिजैसौएक
तैंअनेकरसासनावढावेहै ॥ आगेजोरवद्यौघाण
चक्षुश्रोतनरदेहदेहीभिन्नदेषेभिन्नता
ह्वीभावेहै ॥ वाणारसीदासनिजग्यानकौप्रकासभ
एसुद्धतामेंवासकिएंसिद्धपदपावेहै ॥ ९ ॥ जैसेभ
यौभानकौऊपंथीऊथ्यौपंथकाजकहैतेनतेजथ्यौ
सेदीपकरचहिए ॥ कोऊकोटीधुजनृपछत्रछां
हपुरतजिताहिहैंसभई ॥ जाइश्रीसवामरहिए ॥ मैं
गलप्रचंडतजिकाहूऐसीइच्छाभईएकघरनि
जुश्रसवारीकाजिलहिए ॥ वाणारसीदासजिणव
चनप्रकाससुनिऔरवैणासुन्यौचाहैतासौंऐसो
कहिए ॥ १० ॥ कंचौवमेंकौवडाईप्रीतिपणैंप्रीतिभ
ईपिछुलाईघाणिफेरहूइ ॥ वचनविलासकौनिवा
सवनसघनाईचतुरनागरनरसुरनकहिघेरहूइ ॥
कौरतिसगाहकेपेवाईऐसैंमहानदाएनदेस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ उपमा हइ सवइ जगजे रहइ ॥ हेरि हेरि देष्यौ कोऊ
और न अनेरौ अइसौ बानारसीदास सब सुष अंगइ ।
गिर मेर हइ ॥१२॥ रीतु विपरीति रंग राच्यौ परगुण
रस छायौ झूठै भ्रमता थै बूडौ रिधि घरकौ ॥ तेरै घरि
रिद्धि है अनंत आपरंगि आयै नेक जौ मनूरी फेरै
हाई होइ हरकौ ॥ कायके उपाइ सेती एती होंस पू
रे भलै निज निपाइ ठौ जेती होंस पूजे नरकौ ॥ वा
णारसीदास कहै मूढकौ विचार यहै कोटी छजभयो
चाहै आस करै परकौ ॥१३॥ रितु वरसात नदी नाल
सा जोर वढै वढै न मर्याद कछु सागर के फैल
कौ ॥ नीर कै प्रवाह तिण काठ वृंद वहे जात चित्रा
वेलि वाइ चढै नहीं काहू गैल कौ ॥ वानारसीदा
स ऐसे पंचन के परपंच रंच कन संच आवै वीर
बुद्धि छैल कौ ॥ कछू न अनीति न क्यौं प्रीति परगु
न सेती ॥ ऐसी रीति विपरीति अध्यातम सैली कौ ॥
१४ ॥ शिवरूपाजीत लागो पुंन्य पाप भेद भागी सह
ज सुहाय मोह सेन भई मंद कौ ॥ ग्यान कौ लवधि पा
इ आतम लवधि आइ तेज पुंज कांति जागी उमग आ
नंद कौ राहु कौ विमान छूटै कला प्रगटित पूर होत
जगा जोति जैसे पूनिम के चंद कौ ॥ वाणारसीदास ।
ऐसे आठ कर्म भ्रम छेदि सकति संभालि देषौ सहः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

...गाइ।८ ...॥ ...२६ थाकी श्रीलोकनी
चीविकाई एतौ सुभकाज कारीवातैं कछू सिधि
नां ॥ पाके तौ अभेद रिधि अमलविमल सूरिवांके
मैं नापरद्रलक छू निज रिधिना ॥ वांणारसीदास
री कमीढ देषी हुनी पांनएक दिसितेरा विधिएक
दिसि विधिना ॥३७॥ धर्मदेव वचन रचन जेसै गि
रराज अथिर वचन आनसिद्धार थमंतरौ ॥ पा
रसपषांणा जे भेद रसमहंतरौ ॥ वाणारसीदास कं
कसार अन्य आमजेसै ॥ जनम कौ घोस जेसैं घोस
परणांतरौ ॥ अधातमैला अन्यशासत्र की समाको
इ मा तागुणामीढ देषौ एतौ लागै अंतरौ ॥३८॥
कइ भव पाइ पाइ वकुम मिथ्या इ धाइ परगुणगाइ
गाइन कुदेह धारी है ॥ एक नर भव पूठि नर कअ
क भवन रकइ कें च अ संघ्यात देव धारी है ॥ एक देव
भव पूठि तिर जंच अनंत भौ वंदत वांणारसी संसार
दुषकारी है ॥ घ्याइक समिति पाइ मोह सेन विछुरा
इ अव चिदानंद राइ सकति संभारी है ॥३९॥ प्रथम
परनसद घासनौ वोदिहिबुद्धि अल्पको काजगा
हिताथे वडी लाज है ॥ वैसो ही विचार वाके कछुक
दुमति फेर ते सिवासवरौ तो लोनां छिजो गिरा जहै द
ा वधिपरचं दिकाते जेतनां नजा कैं ॥ वांणारसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

री ॥३३॥ गुणगुणनिअंग… हावंभूर ॥ जलदप
के. दुवहै कालकूटकहरी ॥ मूलबिनपायेमूढकै
जोगसंपिआवैसहजसुभावकाअगमगनिग
हरी ॥ अध्यातमसुं ऐसोतोपेमरमानहोइ ॥ नीवे
तोभैपानेतोवडीराजनीतिचहरी ॥ बांणारसीर
सम्पातनजापेमधेसोइजाणोउदधितमानथेअ
धिकमनलहरी ॥३४॥ तत्वलिजकाजनेरोमन्नप
रगुणायहींमन्नकालहरिमानौंइमनागकारेसे
॥ षिणकमैंतपीषिणजपाइकेजापजपे ॥ षिण
कुकजोगीषिणभोगीपरजारेसे ॥ बांणारसीदा
सएसौपुंबुकननबंधनाकेवदंईकभावनेइआपे
करिमारेसे ॥ जउलउमेंनतोलौंतत्वकापकुंचि
नाहिं ॥ तत्वपायेमूढमतीलागेमतवारेसे ॥३५॥
थिरथंभउपलविपुलजोतिसरतारसमाआपो
आपुणीनकोऊकाकेदलकों ॥ भामेयुतिविंध
अभवाइतैअनेकफेनभूजतोसोदासेंपेनथुंग
थांमथलकों ॥ जाकादिष्टिपुगललौंचेतननमि
नचितैआचरणदेषैसरधानतुनिरमैलकौ ॥ बं
णारसीदासग्यानआतमसुथिरगुणडोलेपर
नाइसोविकारकर्मजलकौ ॥३६॥ इविथकादो
जनेकामाइददेहमातभीवथकोलोव पम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

२२ पलटन रषेलत मिलत लोक याके उलटत भव प
कौं तं निरद्वंद रह्यौ ॥ अजहूं न ठांम आवै विकथा भ्रम
न भावै महामोह निद्रा मैं अनादिकाल सोय रह्यौ ॥ बा
णारसीदास जागे जागै ना सोवनि आवै ॥ जिणव
र उकत अंमृत रस चैरह्यौ ॥ उलटि जे वेले तौ तौ ष
ल सौ उठाइ धरै ॥ उलटन षेलें विन घोटै ख्याल
केरह्यौ ॥ २८ ॥ अधम करत नर स्वारथ के काज
सब स्वारथ के उधम कौं फेर हो व हर सौ ॥ स्वारथ
कौं भजै निज स्वारथ कौं तजि रह्यौ महर कौं सह र उनक्त है दनको
सौ ॥ स्वारथ भलौ है जौ तौ स्वारथ कौं पहचानै ॥
स्वारथ पिछानै विन स्वार स्वारथ जहर सौ बांणा
रसीदास ऐसे स्वारथ के रंगराचे लोकन के स्वार
थ कौं लाग तिक हर सौ ॥ २९ ॥ कौण काज सुगध
करत वधदीन पसु जागी न अगम ज्योति के सौ ज
पकरि है ॥ कौं न काज सलिता समुद्र सरजल डो
है ॥ आतम अमल डोहै आजहूं न डरि है ॥ काहे कौं
वणांमसंकलेस रूप करे जीय पुण्य पाप भेद का
ये कछू न उधरि है ॥ बांणारसीदास जिनउकत अं
मृत रस सोई ग्यांन सुणे तूं अनंत भव तरि है ॥ ३० ॥
षलत अनंतकाल भयौ तौ न षेद पावै तौ भि सैं नत

चिदानंदकी॥२४॥लिषतपढतठांमठांमलीक
लक्षकोटिनैसोपाठपढैकछुंग्यानहूंनवढांये
॥मिथ्यामतीपचिपचिसास्त्रकेसमूहपढै॥बंधी
कलवाजैंस्युचामढोलमढांये॥दीपकसंजोइदी
नौचक्षुहीणनाकेकरिविकटपहारवांपेकबूहे
नचढांये॥वाणारसीदाससोतोग्यानकोप्रकास
भयेलिष्योकछुपढेकछुलष्योहैसोपढांये॥२५॥
एकमृतपिंडजैसेजलकेसंजोगवतै॥भाजनवि
शेषकोटिषिणकमैभेदहै॥ऐसेकर्मतारचिदानं
दकीप्रणतिसेतानरनारीनपुंसकत्रिविधकेवे
दहै॥वांनारसीदासअबवाकोंधूपयाकौंतप॥छू
टैतैसंजोगएउपाधिनकोछेदहै॥पुग्गलकेपर
चैविशेषजातभेदभए॥पुग्गलप्रसंगविनाआत
मअभेदहै॥२६॥ऐहोग्यांनसबदस्रुणतसरनाहि
स्रणि॥षटरसस्वादमांनैतुंसोताहिमाणिरे॥पिं
डब्रह्मंडकोषबरिपोजैतांषोजुपरगुणनिजगु ६५
णजाणोताहिजांणिरे॥विषयकषायकेविलास
मंडैताहिछंडि॥अमलविमलरिद्धिआणोताहि
आणिरे॥वाणारसीदासग्यानग्यानहोइसोईजा
णेऐसैमांनहैरीतिचितसुद्धिठांणिरे॥२७॥ ठेलट

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पौनभू॥ चहूंवामैरह्ला॥ सोमवनानारूपकै नाचैपुद
गह्ला॥ २५॥ इकक्करमदीसैदुष्म ज्पतैउलदापह्ला॥ रू
रुवन्ननगरुवनसौं अधकारधथह्ला॥ असुभरूपसु
भरूपकै दुकुं दिसिनोच ह्ला॥ धरैदु विधिविस्तारज्प
तैवटविरषजटह्ला॥ २६॥ षिनरोवै षिनमैहसै ज्पतैम
दमतवह्ला॥ ज्पतैदुकुवांदि जोमसौंवे होससंभह्ला॥ इ
कसवीचविनोदहै॥ इकमेषदुभह्ला॥ समदिठीस
ज्जनकरैदुकुंसौं हलभह्ला॥ २७॥ जातिदुहूकी एक
ज्पतैं॥ मनिप [illegible] रउह्ला॥ जलवियारसंकोचसौं कहि
५२० यैनदनह्ला॥ उद्दतजलपरबाहमै ज्पतैमौरवुलह्ला
॥ ज्पतैं इसकरमविपाकदे विचउछाषह्ला॥ २८॥ दुकुं
राअथिरसुभाउहै नहिकोइ अटह्ला॥ तंचकोचइ
कसमकरैकलिकालपटह्ला॥ अधकारधकारधं
धाथितिउथलपुथह्ला॥ अरहटहार विहारमै॥ का
उंपरतह्ला॥ २९॥ पापादेवसरीरज्पतैं नलनीरउछ
ह्ला॥ भौपूरनकरिटहिपयापिरिज्पतैंजलटह्ला॥
धुंनपापविचषेदहै परमेरनभह्ला॥ ज्ञानक्रिया
निरदोषहै जहं मोषमुहह्ला॥ ३०॥ वतनन्नसाडामो
हैभैज्पतैंरोहरुहह्ला॥ थितिपवानैउझनोमपायु
[illegible]ानदुहह्ला॥ अवघटअंतरघाटिगई भवमीरपु
[illegible]ा॥ परमचारूपरगटमई॥ शिवराहसुहह्ला॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एतान्मोसहला॥ तिहूंवांदीकरतू॥ तिसौंजियपरागरम
हला॥ ज्यौंरुधिरांदापुटूसौं॥ पटदासैंलहला॥ रुधिरांन
लपषालियै॥ नहिंहोइउज्जला॥ ९॥ जबलगुतेरीम
मुक्षिमैंहुंदाहलचहला॥ सुजसबड़ाईहलाभनो॥ करस
घलबहला॥ तवलगुतंस्यानानहीं॥ क्यामारहिक
हला॥ सोरकरैंदापालनै॥ ज्यौंमलहिलहला॥ १०॥ कि
नतूंजकरासांकलां॥ किनिपकरयापहला॥ भरम
कराज्यौंउरमियां॥ उरजालउगहला॥ चेतनजड़सं
जोगमैं॥ मैंटांकारुहला॥ तूंहिछुडावहिआपुकौं
॥ लषिरूपइलहला॥ ११॥ जोतैंदारिदमानिया॥ कैठ
हमरठहला॥ जोतूंमानहिसंपदा॥ भरिदमकुगहला
॥ जोतूंरूपाकरंकसा॥ अरुभोगरमहला॥ सोसब
नानारूपद्वैनाचैपुदगहला॥ १२॥ जोउरूपदुरल
दृना॥ जोरूपरसहला॥ वैसंधभरिजोवनावृद्ध
अरूवहला॥ लंबमझोलाठिगनागोराअरुकहला
॥ सोसबनानारूपद्वै॥ नाचैपुदगहला॥ १३॥ जोगी
रनद्वैमारिपवैमोहोइनवहला॥ जोमुरिझावैसु
क्विकैं॥ फहलाअरुफहला॥ जेपानीमैंबहिचले
पावकमैंजहला॥ सोसबनानारूपद्वैनाचैपुदग
हला॥ १४॥ सोनपरेरेजोउडेमाटीविचगहला॥ जो
अगासमैंदेषिपैचलरूपअचहला॥ पाभीप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi